अवनि
AVANI

अवनि-प्रवाह

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड

भारत सरकार का उपक्रम

रक्षा मंत्रालय

अंक:4 - वर्ष:2025-26

दृष्टि

एक विश्वस्तरीय कवच वाहनों (आर्मर्ड व्हीकल्स) के निर्माता और घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए एक विश्वसनीय वैश्विक ब्रांड बनने का सतत प्रयास करना।

लक्ष्य

- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत अभियान और मेक इन इंडिया पहल का प्रमुख संरक्षक बनना।
- हमारी रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों के सबसे विश्वसनीय एवं पसंदीदा भागीदार के रूप में घरेलू बाजार में नेतृत्व स्थापित करना तथा उसे बनाए रखते हुए समूह को एक अंतरराष्ट्रीय श्रेणी के रक्षा समूह के रूप में विकसित करना।
- बेहतर मूल्य प्रदान करके और सभी हितधारकों की अपेक्षानुसार ब्रांड 'अवनि' को बनाना और मजबूत करना।
- हमारे मौजूदा और संभावित ग्राहकों के लिए सैन्य गतिशीलता के क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग समाधानों की एकीकृत प्रणाली होना।
- रचनात्मकता एवं नवाचार के लिए प्रतिबद्ध वैश्विक दक्षताओं का एक शिक्षण संगठन बनना।

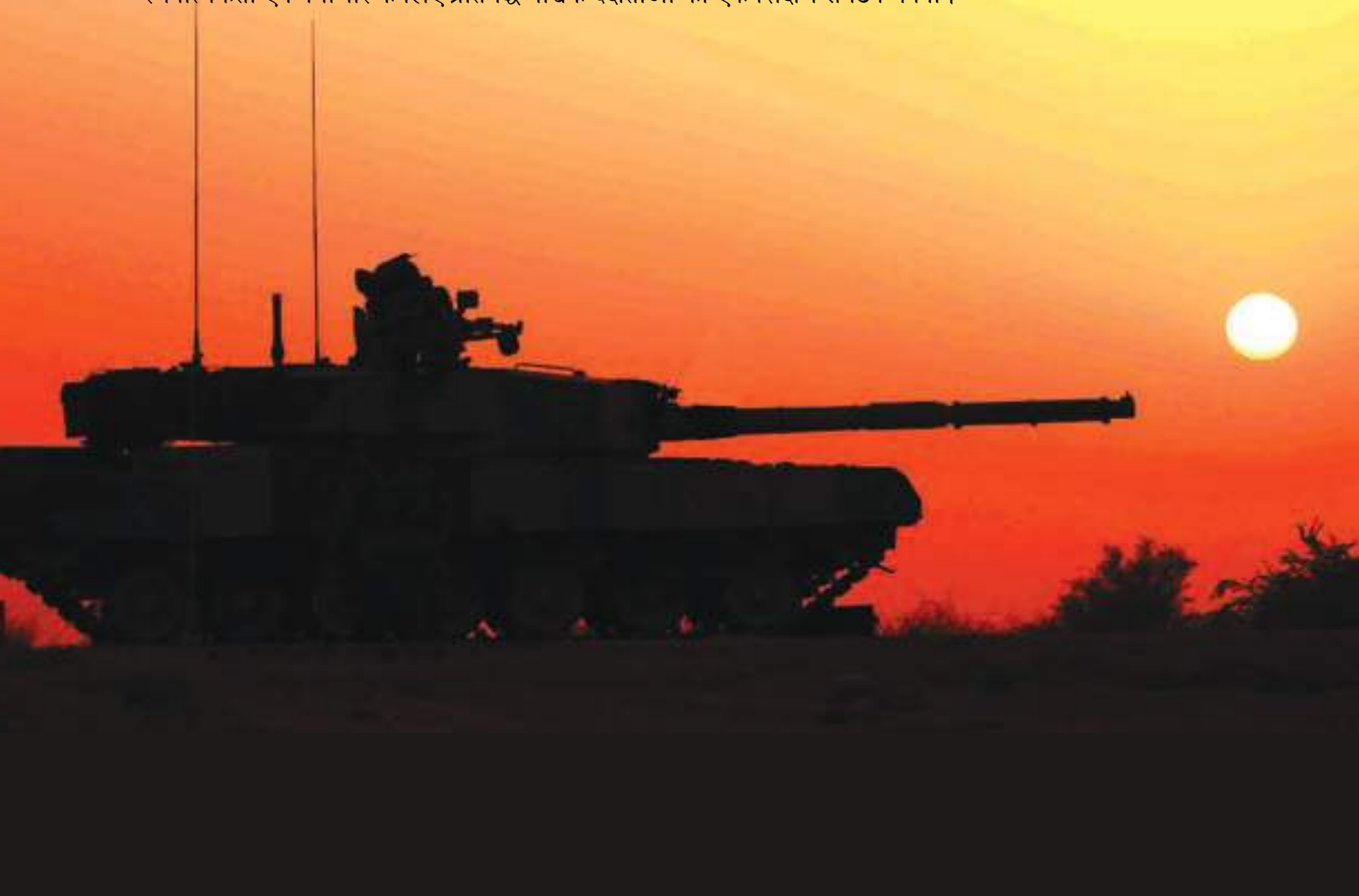

प्रतिज्ञा

हमारे सशस्त्र बलों को सशक्त बनाकर और
सामरिक एवं सुरक्षा क्षेत्र में हमारी संप्रभु
क्षमताओं को मजबूत करके राष्ट्र की सेवा करने
की प्रतिज्ञा करते हैं।

नराकास द्वारा पुरस्कृत

उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु एवीएनएल निगम कार्यालय की ओर से श्री शेख कमाल साहेब, मुख्य महाप्रबंधक(दक्षिण)/एफसीआई के कर-कमलों द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री आर.के. बल, महाप्रबंधक

एवीएनएल निगम कार्यालय की ओर से न.रा.का.स. की बैठक में पधारे श्री निर्मल कुमार दूबे, उप निदेशक/कार्यान्वयन, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कोच्ची के कर - कमलों द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री आर.के. बल, महाप्रबंधक

केवल प्रतिबंधित वितरण हेतु

अवनि-प्रवाह

मुख्य संरक्षक

श्री संजय द्विवेदी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री सत्यव्रत मुखर्जी, निदेशक/संचालन एवं मा.सं..

मुख्य संपादक

श्री संदीप एम. साल्वे, मुख्य महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा.सं.

संपादक मंडल

श्रीमती सुमन त्रिवेदी, संयुक्त महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा.सं.

श्रीमती बी.वी. गाँधीमति, स्टाफ अधिकारी

श्रीमती गीता पार्थसारथी, अनुभाग प्रमुख/राजभाषा

श्री आर.एन. अनन्त पद्मनाभन, क.अ.अ.

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड, चेन्नई - 600054

अध्यक्ष

श्री संजय द्विवेदी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

उपाध्यक्ष

श्री सत्यव्रत मुखर्जी, निदेशक/संचालन एवं मा.सं.

श्री संदीप एम. साल्वे, मुख्य महाप्रबंधक/नि.का. एवं मा.सं.

राजभाषा अधिकारी

श्रीमती सुमन त्रिवेदी, संयुक्त महाप्रबंधक

सचिव

श्रीमती बी.वी. गाँधीमति, स्टाफ अधिकारी

सदस्यगण

श्री बी. जीवा, उप महाप्रबंधक

श्री वी.के. मीणा, उप महाप्रबंधक

श्री सीएच. नरसिंह राव, कार्य प्रबंधक

श्री मुनीश कुमार, कनिष्ठ कार्यप्रबंधक

श्री विक्रांत, कनिष्ठ कार्य प्रबंधक

श्रीमती गीता पार्थसारथी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री आर.एन. अनन्त पद्मनाभन, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के उद्गार

अत्यधिक हर्ष की बात है कि आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा वार्षिक पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, भावों की अभिव्यक्ति और विचारों की शक्ति है। राजभाषा के रूप में हिंदी ने देश को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया है। यह भाषा न केवल जन-जन से जुड़ी है, बल्कि इसकी जड़ों में हमारी परंपराएँ, मूल्य और जीवन-दर्शन समाहित हैं। हिंदी ने साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा और प्रशासन के क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है।

संघ की राजभाषा हिन्दी होने के कारण, हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि राजभाषा संबंधी आदेशों का पालन किया जाए और हमारा सारा प्रशासनिक कार्य हिन्दी में ही संपन्न हो।

मैं जानता हूँ कि एवीएनएल निगम मुख्यालय में राजभाषा हिन्दी का अच्छा माहौल है। यहाँ की राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा प्रत्येक तिमाही बैठक में की जाती है एवं कमियों को दूर करने का प्रयास भी किया जाता है।

यह खुशी की बात है कि वर्ष 2024-25 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड मुख्यालय को लघु कोटि कार्यालयों के वर्ग में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है।

मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक जिस तरह रात के आकाश में चमकते सितारे मिलकर एक अद्भुत दृश्य रचते हैं, उसी तरह विविध विषयों, रचनात्मक विचारों और साहित्यिक भावनाओं से समृद्ध होकर हिंदी की व्यापकता और प्रभावशीलता को दर्शाए।

मैं पत्रिका "अवनि-प्रवाह" के निरंतर एवं सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

संजय द्विवेदी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक /संचालन एवं मा.सं.का संदेश

यह अतिप्रसन्नता का विषय है कि आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड, आवडी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में गृह वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण के कारण भारत अब विश्व व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया है। इतना ही नहीं, आजकल शिक्षा, विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, कंप्यूटरीकरण, ब्रांड स्थापना, संवैधानिक कार्यान्वयन आदि क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी की अहम भूमिका है। भारत में कार्यरत अनेक विदेशी कंपनियाँ अपने उत्पादों के विक्रय एवं प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी भाषा का उपयोग कर रही हैं। उपभोक्ताओं तक अपने उत्पाद पहुँचाने के लिए ये विदेशी कंपनियाँ विज्ञापनों में हिन्दी का व्यापक रूप से प्रयोग कर रही हैं। इसी कारण, आज वैश्विक मंच पर हिन्दी भाषा अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है।

हिन्दी को हमारे संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, जो देश की अखंडता एवं एकता का प्रतीक है। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रसार एवं प्रचार के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करता है। साथ ही, इससे कर्मचारियों को अपने विचार व्यक्त करने का भी अवसर प्राप्त होता है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सामग्री से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के चौथे अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सत्यब्रत मुखर्जी
निदेशक/संचालन एवं मा.सं.

निदेशक/वित्त का संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड, आवडी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में वर्ष 2025-26 की वार्षिक गृह राजभाषा पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का चौथा अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा के बिना भारतीय संस्कृति एवं उसके विकास एवं विस्तार की विवेचना संभव नहीं है। विविध भारतीय गीत-संगीत, नृत्य, नाटक, लोक परंपराओं, धार्मिक अनुष्ठानों एवं चित्रकारी से ले कर साहित्य लेखन तक की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण एवं प्रसार में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारत अपनी समृद्ध संस्कृति एवं हिन्दी भाषा के लिए विश्वविख्यात रहा है। भारतीय संस्कृति एवं हिन्दी भाषा दोनों की समान अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवंत प्रवृत्तियाँ उन्हें एक दूसरे से जोड़ती हैं। हिन्दी विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता एवं आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु के समान है। हमारी संस्कृति के आधारभूत ग्रंथ-रामायण, महाभारत, भगवद् गीता, त्रिपिटक, गुरुग्रंथ साहब आदि की वैश्विक स्वीकार्यता का माध्यम हिन्दी है जिसने अपने सरल एवं सुबोध रूप से जनमानस को प्रभावित किया है ।

राजभाषा हिन्दी में कार्य करना सभी केन्द्र सरकारी कर्मचारियों का संवैधानिक दायित्व है। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ता है। इतना ही नहीं पाठकों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का सुलभ मंच भी प्राप्त होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का यह चौथा अंक अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगा।

मैं पत्रिका के निरंतर प्रकाशन की शुभकामना करता हूँ।

राजीव कुमार शर्मा
निदेशक/वित्त

मुख्य महाप्रबंधक/मा.सं. (नि.का.) का संदेश

यह खुशी की बात है कि आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा वार्षिक पत्रिका ''अवनि-प्रवाह'' का चौथा अंक प्रकाशित किया जाने वाला है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारे देश की एकता और संस्कृति की पहचान है। भारतीय संविधान ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है, जिससे यह पूरे देश में सरकारी कार्यों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अभिन्न हिस्सा बनी है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठन निरंतर प्रयासरत हैं, ताकि यह भाषा और अधिक लोगों तक पहुंच सके।

राजभाषा हिंदी का बढ़ता प्रभाव शिक्षा, प्रशासन, मीडिया और तकनीकी क्षेत्रों में साफ देखा जा सकता है। हिंदी को अपनाने से भाषा के कारण विभिन्न क्षेत्रों में संवाद सुगम हुआ है, जो हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाता है। हमें गर्व है कि हिंदी ने आधुनिक युग में अपने को एक सशक्त और प्रभावी भाषा के रूप में स्थापित किया है।

संघ की राजभाषा होने के नाते राजभाषा हिन्दी में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। गृह पत्रिकाएं हिन्दी प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम हैं। पत्रिका के प्रकाशन से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है तथा पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं सूचनाप्रद रचनाओं की जानकारी प्राप्त होगी।

मुझे विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का यह अंक रोचक रचनाओं से सभी पाठकों का मन मोह लेगा।

मैं पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

संदीप एम. साल्वे
मुख्य महाप्रबंधक/मा.सं. (नि.का.)

राजभाषा अधिकारी के विचार

भारत बहुभाषी देश है। विभिन्न भाषाएं एवं संस्कृत भारत की विशिष्ट पहचान हैं। इन भाषाओं का अपना समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और विशेष परिवेश है। इन विविधताओं के बीच हिन्दी ने पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम बखूबी किया है। प्राचीन काल से ही हिन्दी देश भर में संपर्क भाषा के रूप में काम करती आ रही है। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा भी है। इसका प्रचार-प्रसार हमारा संवैधानिक दायित्व है।

राजभाषा नीति मूलतः प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हम कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के लिए एक उत्साहवर्धक वातावरण सृजित करें। गृह मंत्रालय और रक्षा उत्पादन विभाग/रक्षा मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के अनुसार, सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से यह अपेक्षित है कि वे अपना मौलिक कार्य हिंदी में ही करें।

एवीएनएल निगम कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का अच्छा वातावरण है। यहाँ पर पीएचपी के माध्यम से प्रपत्रों को द्विभाषी रूप में बना कर धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। हिन्दी कार्यशालाएं, समाचार पत्रों का प्रकाशन, तिमाही बैठकें आदि कार्य नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में किए जाते हैं।

वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया जाता है। पत्रिका के इस अंक में पत्रिका के प्रकाशन हेतु निर्धारित सभी मापदंडों के अनुरूप श्रेष्ठ रचनाओं का संकलन कर प्रकाशित किया गया है।

यह वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' का चौथा अंक है। सुधी पाठकगण से अनुरोध है कि वे पत्रिका के इस अंक के संबंध में अपनी कीमती प्रतिक्रिया अवश्य भेजें, जिससे आगामी अंकों को और भी बेहतर बनाया जा सके।

सुमन त्रिवेदी
संयुक्त महाप्रबंधक

संपादकीय

आज की दुनिया सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया है। कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग को सुगम बनाने के लिए सरकार एवं कंपनियों ने ध्यान केंद्रित किया है। आजकल गूगल एवं माइक्रोसाफ्ट ने हिन्दी के विकास के लिए बहुत कुछ किया है। कोई भी व्यक्ति जो कंप्यूटर आदि पर काम करना जानता है तो वह मात्र अठारह घंटे अभ्यास से हिन्दी में अच्छी गति के साथ कंप्यूटर पर टाइप कर सकता है। इतना ही नहीं, गूगल वॉयस के आने के बाद बोल कर भी हिन्दी में टाइप किया जा सकता है। इस प्रकार आज हिन्दी के बढ़ते कदमों की गति कई गुना तेजी होती जा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने हिंदी को डिजिटल पटल पर मजबूत आधार प्रदान किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) हिंदी के विकास का प्रमुख इंजिन बन चुकी है, जो भाषा को वैश्विक मंच पर ले जा रही है। चैटजीपीटी, जेमिनै, डीपसीक जैसी प्रणालियाँ अब हिंदी में संवाद, अनुवाद एवं सृजन को सक्षम कर रही हैं।

भाषिणी-अनुवादिनी जैसे अनुवाद उपकरण सभी भारतीय भाषाओं में त्वरित अनुवाद प्रदान करते हैं तथा शिक्षा-शासन में भाषाई बाधाओं को दूर कर रहे हैं। स्वयं, दीक्षा जैसे प्लेटफॉर्मों पर एआई-आधारित पाठ्यक्रम हिंदी में उपलब्ध हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच रहे हैं। वॉयस टाइपिंग, कविता-लेखन, सबटाइटलिंग से पत्र-पत्रिकाएँ तेजी से डिजिटल रूप धारण कर रही हैं। एआई हिंदी साहित्य व लोकगीतों का डिजिटलीकरण कर रही है, जो नई पीढ़ी के लिए अमूल्य संग्रह बन रहा है। डेटा विश्लेषण, चैटबॉट्स तथा वर्चुअल सहायक अब हिंदी में कार्यरत हैं। यह क्रांति हिंदी को डिजिटल भारत का चालक बनाएगी तथा राजभाषा प्रचार तकनीकी आत्मनिर्भरता से जुड़ गया है।

एवीएनएल में भी राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। मुख्यालय द्वारा अनेक दस्तावेजों का पीएचपी माड्यूल प्रोग्रामिंग के जरिए द्विभाषीकरण किया गया है जिसने राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति में तेजी लाई है। ई-ऑफिस द्वारा कार्य द्विभाषी में करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। मुख्यालय में राजभाषा से संबंधित अधिकांश कार्यों का कंप्यूटरीकरण किया गया है।

इसी क्रम में मुख्यालय द्वारा वार्षिक ई-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका का चौथा अंक है। इसमें विविध रचनाओं का समावेश कर इसे और अधिक रोचक बनाने का सार्थक प्रयास किया गया है। यह पत्रिका केवल सूचनाओं और गतिविधियों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि हमारे विचारों, सामूहिक प्रयासों और टीम भावना का एक जीवंत प्रमाण भी है।

संपादक मंडल इस अंक में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, लेखकों और सहयोगियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता है। पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें, ताकि आगामी अंकों को और अधिक उत्कृष्ट एवं उपयोगी बनाया जा सके।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना	पृष्ठ संख्या
01	अवनि-गीत	14
02	आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड में राजभाषा के बढ़ते कदम	15
03	राजभाषा अधिनयम 1963 की धारा 3(3)	17
04	तमिलनाडु के स्वतंत्रता सेनानी - वेलु नाचियार	18
05	भारत की वायु रक्षा प्रणाली: एस-400 ट्रायम्फ – सुदर्शन चक्र	20
06	समानार्थी शब्द	21
07	राजभाषा नियम 1976	22
08	मुहावरे-अर्थ सहित	24
09	प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण	25
10	मेरी एक्यूपंक्चर यात्रा	28
11	विशिष्ट अतिथियों का आगमन	30
12	मुख्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक	31
13	हँसना मना है	32
14	मोबाइल (नाटक)	33
15	संविधान के अनुच्छेद 351	36
16	मुख्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक	37
17	एवीएनएल स्थापना दिवस की झलक	38
18	बुरा या खराब समय	40
19	डिजिटल डिटॉक्स	42
20	हँसना मना है	44
21	कविता	45
22	शनिवार के बाद रविवार क्यों आता है?	46
23	Why Sunday comes after Saturday	49
24	हिन्दी दिवस/पखवाड़ा - प्रतियोगिताओं का परिणाम	54
25	எவ் வளவு அழகு	56
26	தன்னம்பிக்கை	58

अवनि-गीत

राष्ट्र की रक्षा में रत हूँ 'अवनि' हूँ मैं।
थरथराए शत्रु जिससे अनल हूँ मैं।
राष्ट्र की रक्षा में रत हूँ 'अवनि' हूँ मैं।

हिम शिखर हो या कि रेगिस्तान हो।
सघन वन हो या खुला मैदान हो।
बिन रुके बढ़ता ही जाता अभय हूँ मैं।
राष्ट्र की रक्षा में रत हूँ 'अवनि' हूँ मैं।

'भीष्म' हैं 'विजयंत' हैं 'अर्जुन' और 'अजेय' हैं।
पूरी दुनिया में हमारे टैंक अपराजेय हैं।
देश की रक्षा की खातिर 'कवच' हूँ मैं।
राष्ट्र की रक्षा में रत हूँ अवनि हूँ मैं।

चल पड़ेंगे 'नाग' और आकाश जब।
ध्वस्त होंगे दुश्मनों के ठौर तब।
हर चुनौती को हूँ तत्पर प्रलय हूँ मैं।
राष्ट्र की रक्षा में रत हूँ 'अवनि' हूँ मैं।

सैन्य वाहक माल वाहक मैं बनाऊं।
सैनिकों को रसद पानी ले के जाऊं।
शत्रु को मैं प्रलय जनहित सदय हूँ मैं।
राष्ट्र की रक्षा में रत हूँ 'अवनि' हूँ मैं।

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड में राजभाषा के बढ़ते कदम

1. पीएचपीः-

वर्ष 2024-25 के दौरान 65 प्रारूपों के लिए पीएचपी मॉड्यूल बनाए गए हैं और विभिन्न अनुभागों द्वारा उपयोग में लाए गए हैं, जिससे धारा3(3) के तहत जारी किए जाने वाले दस्तावेज, पत्र, नोटिंग आदि का हिंदी और अंग्रेजी में प्रेषण सुनिश्चित हो गए।

2. राजभाषा सम्मेलन का आयोजनः-

एवीएनएल इकाइयों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की निगरानी के लिए, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री संजय द्विवेदी की अध्यक्षता में दि.23 फरवरी, 2025 को राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में श्री सी. रामचंद्रन, निदेशक/वित्त, श्री बि. पट्नायक, निदेशक/मानव संसाधन और श्री सत्यव्रत मुखर्जी, निदेशक/संचालन ने भाग लिया। सम्मेलन में सभी इकाइयों के मुख्य महाप्रबंधक, राजभाषा अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे। इकाइयों द्वारा किए गए द्विभाषी कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और सभी निदेशकों ने प्रदर्शनी का निरीक्षण किया। इसके बाद, इकाइयों द्वारा अपनी-अपनी इकाइयों में की जा रही राजभाषा गतिविधियों पर प्रकाश डालने के लिए मल्टीमीडिया प्रस्तुति दी गई। श्री बि. पट्नायक, निदेशक/मानव संसाधन ने प्रत्येक इकाई को उनकी प्रस्तुति के बाद मार्गदर्शन प्रदान किया और राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन के लिए सुझाव दिए। अंत में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वाहन निर्माणी जबलपुर को प्रथम पुरस्कार, भारी वाहन निर्माणी आवडी को द्वितीय पुरस्कार एवं एमटीपीएफ को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सर्वश्रेष्ठ राजभाषा पत्रिका पुरस्कार इंजिन निर्माणी आवडी को एवं सर्वश्रेष्ठ राजभाषा प्रदर्शनी पुरस्कार शिक्षण संस्थान, आवडी को प्रदान किया गया।

3. वार्षिक रिपोर्ट का द्विभाषी में प्रकाशनः-

एविएनएल की वार्षिक रिपोर्ट पूर्ण रूप से द्विभाषी रूप में प्रकाशित की गई।

4. वेबसाइटः-

मुख्यालय की वेबसाइट द्विभाषी में उपलब्ध है।

5. पत्राचारः-

पत्राचार के प्रतिशत को 75.46% तक बढ़ाया गया है और पत्राचार का लक्ष्य हासिल कर लिया गया है।

6. नोटिंगः-

'ग' क्षेत्र को नोटिंग के लिए निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है और नोटिंग का प्रतिशत 53.11% तक बढ़ाया गया है।

7. गृह समाचार पत्र का प्रकाशनः-

मुख्यालय की गतिविधियों को सहोदर इकाइयों तथा सभी निर्माणियों को अवगत कराने तथा राजभाषा प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से त्रैमासिक गृह समाचार पत्र 'अवनि-समाचार' का प्रकाशन आरंभ किया गया है तथा अब तक इसके 16 अंक नियमित रूप से प्रकाशित किए गए हैं।

8. हिन्दी प्रशिक्षण:-

इस मुख्यालय में सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी भाषा में प्रशिक्षित हैं।

9. हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन:-

कर्मचारियों को उनके कार्यालयीन कार्य बेझिझक हिन्दी में कराने के उद्देश्य से हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशालाएं प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से आयोजित की गई। इसमें कर्मचारियों ने भाग ले कर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

10. अधिकारियों के लिए विशेष हिन्दी कार्यशाला:-

मुख्यालय में कार्यरत अधिकारियों के लिए विशेष रूप से हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इस वर्ष दि.02.09.2024 को आयोजित कार्यशाला में 12 अधिकारियों ने भाग लिया।

11. हिन्दी दिवस/सप्ताह का आयोजन:-

दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया था जिस दौरान कर्मचारियों के हिन्दी ज्ञान के अनुसार दो वर्गों में 06प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी। पखवाड़े के समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए गए।

12. हिन्दी पुस्तकों की खरीद:-

वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान रु.10,000/- की हिन्दी पुस्तकें खरीदी गईं जोकि गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप है।

13. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें:-

वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में नियमित रूप से आयोजित की गई थी।

14. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:-

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित बैठकों में मुख्यालय के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। नराकास द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर भेजा जाता है।

15. उपलब्धियाँ :-

1. एवीएनएल की चौथी वार्षिक रिपोर्ट पूर्ण रूप से हिन्दी में बनाई गई।

2. दि. 20.06.2025 को एवीएनएल निगम कार्यालय द्वारा हिन्दी नाटक प्रतियोगिता का प्रायोजन एवं आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में एवीएनएल टीम द्वारा प्रस्तुत नाटक को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ।

3. दि. 28.07.2025 को आयोजित न.रा.का.स. की बैठक के दौरान चेन्नई स्थित 10-100 कर्मचारी के कार्यालयों के वर्ग में एवीएनएल कार्पोरेट कार्यालय को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

4. दि.14.09.2025 से दि.29.09.2025 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी शब्द-शक्ति, श्रुत लेखन, गीत, अंताक्षरी, वार्तालाप आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दि. 29.09.2025 को आयोजित समापन समारोह के दौरान डॉ.

चिट्टी अन्नपूर्णा, हिन्दी विभागाध्यक्ष, मद्रास विश्व-विद्यालय के कर-कमलों द्वारा श्रीमती सुशीला द्विवेदी, वरिष्ठ साहित्यकार के रेशम का कीड़ा एवं मंथन नामक दो कहानि संग्रह का विमोचन किया गया एवं हिन्दी पखवाड़े के प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर कलाक्षेत्र कॉलेज के विद्यार्थियों एवं एवीएनएल की इकाइयों के कर्मचारियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

5. दि. 28.07.2025 को आयोजित न.रा.का.स. की बैठक के दौरान एवीएनएल की वार्षिक पत्रिका 'अवनि-प्रवाह' के तृतीय अंक को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3)

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) निम्नलिखित दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य है :
Use of Hindi and English for the following documents is compulsory as per Article 3 (3) of Official Language Act, 1963 :

संकल्प	Resolution
सामान्य आदेश	General Orders
नियम	Rule
अधिसूचनाएं	Notification
प्रशासनिक रिपोर्ट	Administrative reports
संसद के समक्ष रखी जाने वाली रिपोर्ट एवं अन्य कागज़ात	Reports and other documents to be placed before the Parliament
प्रेस विज्ञप्तियाँ	Press communiqué
संविदाएं	Contracts
करार	Agreements
लाइसेंस	Licence
परमिट	Permits
निविदा सूचना	Tender Notices
निविदा फार्म	Tender forms

सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

All the above documents should be in bilingual and it will be the responsibility of the Officers who are signing these documents to ensure that they are prepared in bilingual and issued.

तमिलनाडु की स्वतंत्रता सेनानी - वेलु नाचियार – साहसी रानी जिसने अंग्रेज़ों को चुनौती दी

श्री दिनेश विजयकुमार, क.का.प्र.

वेलु नाचियार, जिन्हें वीरांगना के रूप में सम्मानित किया जाता है, भारत के इतिहास में सबसे प्रारंभिक नेताओं में से एक थीं जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। दि.03 जनवरी 1730 को तमिलनाडु के रामनाथपुरम में जन्मी, वह राजा विजय रघुनाथ सेतुपति और रानी शक्कंधिमुत्तात्ताल की एकमात्र पुत्री थीं। उन्हें एक पुरुष वारिस की तरह पाला गया था। बचपन से ही उन्हें शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक एवं युद्ध कौशल में भी प्रशिक्षण दिया गया था। उन्होंने फलारी (फेंकने वाला हथियार), घुड़सवारी और तीरंदाजी जैसी युद्धकलाएँ सीखीं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने तमिल, तेलुगु, उर्दू एवं फ्रेंच सहित कई भाषाओं में प्रवीणता हासिल की। इन सभी योग्यताओं ने उन्हें एक सक्षम और सशक्त शासक बनाया।

सन् 1746 में, वेलु नाचियार का विवाह शिवगंगा के राजा मुत्तुवडुगनाथर से हुआ और उनका जीवन सुखपूर्वक आगे बढ़ा, लेकिन सन् 1772 में एक दुखद मोड़ आया। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने शिवगंगा पर आक्रमण किया और युद्ध में उनके पति की हत्या कर दी। वेलु नाचियार अपनी नवजात पुत्री के साथ किसी तरह बच निकलीं। यह घटना उनके साहस को कमजोर नहीं कर सकी बल्कि उन्हें अपने राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने लगी।

निर्वासन के दौरान वेलु नाचियार ने सैन्य शक्ति को फिर से संगठित किया और नए गठबंधन बनाए। उन्होंने मैसूर के शासक हैदर अली की सुरक्षा में दिंडिगल में आश्रय लिया। वेलु नाचियार हैदर अली से उर्दू में बात की एवं ब्रिटिश विरोध के बारे में बताया। वेलु नाचियार की उर्दू भाषा की समझ से प्रभावित होकर हैदर अली ने बहुत मदद करने का वादा किया और उन्हें सैनिकों एवं हथियारों के रूप में सहायता दी।

आठ साल तक उन्होंने दिंडीगल किला, विरुपारच्चि किला एवं अय्यम्पालयम किला जैसी अलग-अलग जगहों पर कैंप किया। मरुधु भाइयों की बड़ी कोशिशों से शिवगंगा के लोग इकट्ठा हुए और एक प्रतिरोध बल बनाया गया। वेलु नाचियार और मरुधु भाइयों ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया।

वेलु नाचियार ने ब्रिटिश युद्ध रणनीतियों का गहराई से अध्ययन किया और उनकी कमज़ोरियों का पता लगाया। उनके नेतृत्व की प्रतिभा इस बात से स्पष्ट थी कि उन्होंने महिला योद्धाओं सहित अपना स्वयं का सैन्य दल तैयार किया।

उनके संघर्ष का सबसे उल्लेखनीय क्षण ब्रिटिश गोला-बारूद भंडार को नष्ट करने की योजना थी। उनके वफादार सेनापति कुइली ने इस खतरनाक कार्य को करने का निर्णय लिया। कुइली ने अपने शरीर पर तेल डालकर ब्रिटिश गोदाम में आग लगा दी और अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस घटना से ब्रिटिश सेना कमजोर हुई और वेलु नाचियार को निर्णायक प्रहार करने का अवसर मिला।

1780 में वेलु नाचियार ने ब्रिटिशों से शिवगंगा क्षेत्र को सफलतापूर्वक वापस प्राप्त किया और फिर से शासन किया। उन्होंने लगभग दस वर्षों तक बुद्धिमानी और दृढ़ता के साथ शासन किया। अपने प्रशासन के दौरान उन्होंने जनता के कल्याण, न्याय की स्थापना और क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने पुरुषों और महिलाओं दोनों की सेना तैयार की ताकि उनका राज्य विदेशी ताकतों से सुरक्षित रहे।

25 दिसंबर 1796 को वेलु नाचियार का निधन हो गया, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। वह भारत की पहली ऐसी रानी थीं जिन्होंने 1857 के विद्रोह से बहुत पहले ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ युद्ध लड़ा। उनका साहस, सैन्य रणनीति और दृढ़ संकल्प उन्हें भारत के सबसे प्रारंभिक स्वतंत्रता सेनानियों में से एक बनाता है।

अंत में, वेलु नाचियार केवल एक साहसी योद्धा ही नहीं बल्कि एक सक्षम शासक भी थीं, जिन्होंने अपने लोगों की स्वतंत्रता के लिए अपने आराम और सुरक्षा का त्याग किया। इतिहास में अक्सर पुरुष नेताओं का उल्लेख किया जाता है, लेकिन वेलु नाचियार भारतीय महिलाओं की देशभक्ति और शक्ति का शानदार उदाहरण हैं। उनकी कहानी को भारतीय इतिहास में और अधिक सम्मान और पहचान मिलनी चाहिए।

स्मारक चिह्न

- 18 जुलाई 2014 को, शिवगंगा जिले के सुरक्कुलम में रु.60 लाख की लागत से बने स्वतंत्रता सेनानी वेलु नाचियार मेमोरियल हॉल का उद्घाटन तमिलनाडु की तत्कालीन मुख्यमंत्री जे. जयललिता ने एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के ज़रिए किया था।
- वेलु नाचियार द्वारा उपयोग की गई कई चीज़ें, जैसे भाला और तलवार, शिवगंगा के एक म्यूज़ियम में संभालकर रखी गई हैं।
- भारत सरकार ने 31 दिसंबर 2008 को रानी वेलु नाचियार की याद में एक डाक टिकट जारी किया।

भारत की वायु रक्षा प्रणाली: एस-400 ट्रायम्फ - सुदर्शन चक्र

श्रीमती गीता के, क.का.प्र.

उत्पत्ति और अधिग्रहण

• विकसितकर्ता: रूस का अल्माज़-एंटे रक्षा निगम

• खरीदार: भारत ने अक्टूबर 2018 में रूस के साथ सरकार-से-सरकार समझौते के तहत पाँच एस-400 रेजिमेंट के लिए 5.43 बिलियन अमेरिकी डॉलर का समझौता किया।

• आपूर्ति: पहली इकाइयाँ 2021 के अंत में वितरित की गईं। सभी पाँच रेजिमेंटों का पूर्ण रूप से 2026-27 तक शामिल होने की उम्मीद है।

भारत ने इसे क्यों खरीदा ?

• पाकिस्तान और चीन से आने वाले खतरों के विरुद्ध वायु रक्षा को मज़बूत करने के लिए।

• महत्वपूर्ण संपत्तियों और शहरों को विमानों, यूएवी, क्रूज़ मिसाइलों और बैलिस्टिक मिसाइलों से बचाने के लिए।

• बहुस्तरीय रक्षा प्रदान करता है, जो भारत की मौजूदा मिसाइल सुरक्षा में कमियों को पूरा करता है।

एस-400 की क्षमताएँ

• रेंज:

40एन6 मिसाइल: 400 किमी तक

48एन6: लगभग 250 किमी
9एम96 श्रृंखला: 40-120 किमी
• ऊँचाई: 30 किमी तक ऊँचे लक्ष्यों को भेद सकती है।
• लक्ष्यों की गति: मैक 14 (लगभग 17,000 किमी/घंटा) तक की गति से उड़ने वाले खतरों को रोक सकती है।
• रडार कवरेज: 600 किमी तक की दूरी पर लक्ष्यों का पता लगा सकती है।
• संलग्नक क्षमता: एक साथ 300 लक्ष्यों को ट्रैक करती है और एक साथ 36 लक्ष्यों को संलग्न कर सकती है।

भारत में तैनाती
• भारत ने उत्तरी और पूर्वी सीमाओं पर एस-400 की तैनाती शुरू कर दी है, जिसका ध्यान इनसे निपटने पर केंद्रित है:
लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में चीनी वायु शक्ति
पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तानी विमानों और मिसाइलों का खतरा
• नई दिल्ली और प्रमुख रणनीतिक स्थानों के लिए एक सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

रणनीतिक महत्व
• भारत के वायु और मिसाइल रक्षा नेटवर्क को मज़बूत करता है।
• शत्रुतापूर्ण हवाई घुसपैठ के विरुद्ध एक निवारक के रूप में कार्य करता है।
• एक साथ कई मोर्चों पर रक्षा करने की भारत की क्षमता को बढ़ाता है।
• अमेरिकी प्रतिबंधों (सीएएटिएसएसए) के खतरे के बावजूद, भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा को प्राथमिकता दी और रूसी सौदे को आगे बढ़ाया।

सारांश:
भारत ने 2018 में रूस से एस-400 खरीदा था, और यह दुनिया की सबसे उन्नत वायु रक्षा प्रणालियों में से एक है। पूरी तरह से तैनात होने के बाद, यह पाकिस्तान और चीन दोनों से हवाई खतरों के विरुद्ध भारत की सुरक्षा को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा देगा।

समानार्थी शब्द

1 अग्नि - पावक, अनल, वह्नि, आग
2 अमृत - पीयूष, सुधा, अमिय
3 अश्व - घोड़ा, तुरंग, सैन्धव, हय
4 आँख - नेत्र, नयन, चक्षु, लोचन, अक्षी
5 आकाश - गगन, व्योम, अंबर, नभ, आसमान
6 कमल - जलज, सरोज, पंकज, अरविंद, अंबुज, पद्म
7 जल - नीर, पानी, पय, अंबु, सलिल, वारि
8 तालाब - सर, तड़ाग, पुष्कर, जलाशय, पद्माकर
9 नदी - सरिता, तरंगिणी, निर्झरिणी, तटिनी
10 वायु - हवा, समीर, मरुत, वात, पवन
11 पर्वत - भूधर, शैल, गिरि, नग, तुंग
12 पृथ्वी - भू, धरा, धरती, वसुधा, वसुंधरा
13 पुष्प - फूल, कुसुम, सुमन, प्रसून
14 बिजली - चंचला, चपला, सौदामिनी, दामिनी, तड़ित
15 मेघ - घन, वारिद, बादल, नीरद, अंबुद, पयोधर
16 रात्री - निशा, रैन, यामिनी, विभावरी
17 राजा - नृप, भूप, नृपति, नरेश, भूपति
18 बाग - वाटिका, उद्यान, उपवन, बगीचा
19 वृक्ष - तरु, विटप, पादप, पेड़, द्रुम
20 स्वर्ण - सोना, कंचन, कनक, हाटक

राजभाषा नियम, 1976
OFFICIAL LANGUAGE ACT, 1976

1. नियम/ Rule - 5

राजभाषा अधिनियम, 1976 के नियम 5 में उल्लिखित है कि हिन्दी में कहीं से भी प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही होंगे।

Communications from a Central Government Office in reply to communications in Hindi shall be in Hindi as per Rule 5 of Official Language Act, 1976.

2. नियम/ Rule - 6

नियम 6 में उल्लिखित अनुसार अधिनियम की धारा 3 की उपधारा 3 में बताए गए सभी दस्तावेज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में साथ-साथ निकाले जाएंगे और इसका उत्तरदायित्व इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का होगा।

Both Hindi and English shall be used for all documents referred to in sub-section(3) Section 3 of the Act and it shall be the responsibility of the persons signing such documents to ensure that such documents are made, executed or issued both in Hindi and in English.

3. नियम/ Rule - 7

कर्मचारी कोई भी आवेदन, अपील या अभिवेदन हिन्दी में या अंग्रेजी में दे सकता है। जब आवेदन हिन्दी में दिया जाता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किया जाता है तब उसका उत्तर भी हिन्दी में देना अनिवार्य है।

An employee may submit an application, appeal or representation in Hindi or in English.

(i) Any application, appeal or representation referred to in sub-rule (1) when or signed in Hindi, shall be replied to in Hindi.

(ii) Where an employee desires any order or notice relating to service matters (including disciplinary proceedings) required to be Hindi, or the case may be, in English, it shall be given to him in that language without delay.

4. नियम/ Rule - 8

कर्मचारी फाइल में नोटिंग हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है और उससे, दूसरी भाषा में उसका अनुवाद नहीं मांगा जाएगा।

जिस कर्मचारी को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है, हिन्दी दस्तावेजों, पत्रों आदि के अंग्रेजी अनुवाद की मांग नहीं कर सकता। यदि दस्तावेज कानूनी या तकनीकी प्रकृति का हो, तो अंग्रेजी अनुवाद मांगा जा सकता है।

An employee may record a note or minute on a file in Hindi or in English without being himself required to furnish a translation thereof in the other language.

No Central Government employee possessing a working knowledge of Hindi may ask for an English translation of any document in Hindi except in the case of documents of legal or technical nature.

5. नियम/ Rule - 8 (4)

जिन अधिसूचित कार्यालयों में 80 प्रतिशत कर्मचारी हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर चुके हैं, केन्द्रीय सरकार आदेश दे सकती है कि वहाँ हिन्दी में ही नोटिंग और ड्राफ्टिंग किया जाए।

The Notified Offices in which 80- of the employees have attained proficiency in Hindi, Central Government may, by order specify these offices to use Hindi alone for noting and drafting.

6. नियम/ Rule - 9

वे कर्मचारी हिन्दी में प्रवीणता-प्राप्त समझे जाएंगे जिन्होंने

(क) मैट्रिक या समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा में हिन्दी को माध्यम के रूप में अपनाया हो।

(ख) बी.ए. अथवा समकक्ष परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक रूप में अपनाया हो

(ग) यह घोषणा कर दें कि उन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है।

An employee shall be deemed to possess proficiency in Hindi if-

(i) he has passed the Matriculation or any equivalent or higher examination with Hindi as the medium of examination or

(ii) he has taken Hindi as an elective subject in the degree examination or any other examination equivalent to or higher than the degree examination

(iii) he declares himself to possess proficiency in Hindi in the form annexed to these rules.

7. नियम/ Rule - 10

वे कर्मचारी हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त समझे जाएंगे जिन्होंने

(क) प्राज्ञ परीक्षा पास की हो।

(ख) प्राज्ञ के समकक्ष कोई परीक्षा पास की हो।

An employee shall be deemed to have acquired working knowledge of Hindi

(i) the Pragya examination conducted under the Hindi Teaching Scheme of the Central Government or when so specified by that Government in respect of any particular category of posts, any lower examination under that Scheme or

(ii) passed any other examination equivalent to pragya.

8. नियम / Rule - 10 (4)

जिन कार्यालयों के कर्मचारीवृन्द में 80 प्रतिशत को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।

The names of Central Government Offices, 80- of the staff whereof have acquired working knowledge of Hindi, shall be notified in the Official Gazette.

9. नियम / Rule - 11

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की निम्नलिखित सामग्री हिन्दी/अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होगी।

(1) सभी मैन्युअल, कोड, नियम आदि।

(2) सभी फार्म तथा रजिस्टर।

The following items will be in bilingual in Central Government offices:

(i) All manuals, codes, rules etc.

(ii) All forms and Registers

(iii) All Nameboards, Signboards, Letter head, envelopes & other stationery items

10. नियम/ Rule - 12

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों का समुचित रूप से अनुपालन किया जाता है और वह इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जाँच-बिंदुओं को निर्धारित करें।

It shall be the responsibility of the administrative head of each Central Government office to ensure that the provisions of the Act and the Rules are properly complied with and to devise suitable and effective check points for the purpose.

मुहावरे - अर्थ सहित	
अपना हाथ जगन्नाथ	आत्मनिर्भरता सर्वोत्तम है।
अंधी पीसे, कुत्ता खाए	काम कोई करे, लाभ किसी और को हो।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता	अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता।
अंधों में काना राजा	मूर्खों क बीच में थोड़ा-सा पढ़ा-लिखा व्यक्ति।
अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग	सबका अपना-अपना विचार
आ बैल मुझे मार	विपत्ति को स्वयं बुलाना
आम के आम गुठलियों के दाम	दोहरा लाभ होना
आवश्यकता आविष्कार की जननी है।	जरूरत हो, तो व्यक्ति उसे पूरा करने का रास्ता खोज ही निकालता है।
ऊँट के मुँह में जीरा	बहुत थोड़ा
एक और एक ग्यारह	एकता में बल है।
एक पंथ और दो काज	एक साथ दो काम होना
कमान से निकला तीर वापस नहीं आता	मुँह से निकली बात वापस नहीं ली जा सकती
कागज़ की नाव नहीं चलती	बेईमानी से स्थाई लाभ नहीं होता।
घर की मुर्गी दाल बराबर	अपने आदमी को कम महत्व देना
चन्द्रमा को भी ग्रहण लगता है	अच्छे से अच्छा व्यक्ति भी किसी न किसी दोष से गस्त होता है।
जल में रह कर मगर से बैर	जिस पर आश्रित हो, उसी से दुश्मनी
देखें ऊँट किस करवट बैठता है	देखें फैसला क्या होता है ?
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद	अयोग्य व्यक्ति किसी अच्छी चीज़ के गुण नहीं समझ सकता।
मुँह में राम बगल में छुरी	ऊपर से सज्जन, अंदर से कपटी
साँप मरे न लाठी टूटे	बिना किसी प्रकार की हानि के काम बन जाना

प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण

श्री आर.एन. अनन्त पद्मनाभन, क.अ.अ.

हर जीवन, हर पल मायने रखता है...

प्रस्तावना: कार्यस्थल पर हमारा अधिकांश समय बीतता है। यह वह जगह है जहाँ हम सिर्फ काम ही नहीं करते, बल्कि एक समुदाय के रूप में एक-दूसरे के साथ जुड़ते हैं। ऐसे में, सुरक्षा केवल नियमों और प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि यह हमारे सहकर्मियों की देखभाल करने की हमारी क्षमता पर भी निर्भर करती है। दुर्घटनाएं कभी बताकर नहीं आतीं, लेकिन उनके परिणामों को कम करने की हमारी तैयारी ही हमें वास्तविक सुरक्षा प्रदान करती है। प्राथमिक चिकित्सा (First Aid) प्रशिक्षण इसी तैयारी का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह हमें तत्काल, निर्णायक कार्रवाई करने के लिए सशक्त बनाता है जब हर सेकंड मायने रखता है।

प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान हमें केवल संकट के समय ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में भी आत्मविश्वास देता है। यह हमें सिखाता है कि कैसे एक छोटी सी चोट को गंभीर होने से रोका जाए, या कैसे किसी बड़े आपातकाल में डॉक्टर के आने तक स्थिति को संभाला जाए। यह सिर्फ एक कोर्स नहीं, बल्कि एक जीवन रक्षक कौशल है।

प्राथमिक चिकित्सा क्या है और क्यों है यह महत्वपूर्ण?

प्राथमिक चिकित्सा किसी भी घायल या बीमार व्यक्ति को चिकित्सा सहायता उपलब्ध होने से पहले दिया गया तत्काल उपचार है। इसका उद्देश्य सिर्फ "इलाज" करना नहीं, बल्कि रोगी को स्थिर करना, दर्द कम करना और सबसे महत्वपूर्ण, जीवन बचाना है।

इसके तीन मुख्य उद्देश्य हैं:

1. जीवन बचाना (Preserve Life): गंभीर चोट या बीमारी की स्थिति में, प्राथमिक उपचार जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकता है। जैसे- हृदय गति रुकने पर CPR (कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन) देना।
2. स्थिति को बिगड़ने से रोकना (Prevent Worsening): एक छोटी सी चोट अगर अनुपचारित छोड़ दी जाए, तो वह गंभीर संक्रमण या जटिलता का कारण बन सकती है। प्राथमिक चिकित्सा इसे रोकती है।
3. रिकवरी (सुधार) में मदद करना (Promote Recovery): सही और समय पर दिया गया उपचार रोगी को तेजी से ठीक होने में मदद करता है।

आपातकाल में 'ABC' का महत्व: प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण का एक मूल सिद्धांत 'ABC' है, जो किसी भी आपात स्थिति में हमारी कार्रवाई को निर्देशित करता है:

• A - Airway (वायुमार्ग): सुनिश्चित करें कि पीड़ित की श्वास नली खुली और स्पष्ट है। गले में फंसी हुई कोई भी वस्तु तत्काल हटानी चाहिए।
• B - Breathing (श्वसन): जांचें कि क्या व्यक्ति सांस ले रहा है। यदि नहीं, तो कृत्रिम श्वसन (माउथ-टू-माउथ) की आवश्यकता हो सकती है।
• C - Circulation (रक्त संचार): रक्त के संचार की जांच करें (नब्ज देखकर) और यह सुनिश्चित करें कि शरीर में रक्त का प्रवाह सही है। गंभीर रक्तस्राव को तुरंत रोकना चाहिए।

गोल्डन ऑवर (Golden Hour): हर मिनट कीमती
चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार, किसी भी गंभीर चोट या दुर्घटना के बाद के पहले 60 मिनट को 'गोल्डन ऑवर' कहा जाता है। इस अवधि के दौरान यदि मरीज को सही और प्रभावी प्राथमिक उपचार मिल जाए, तो उसकी जान बचने की संभावना 80% तक बढ़ जाती है, और स्थायी विकलांगता का जोखिम काफी कम हो जाता है।

यह 'गोल्डन ऑवर' ही प्राथमिक चिकित्सा के महत्व को रेखांकित करता है। एक प्रशिक्षित सहकर्मी या आसपास का कोई व्यक्ति इस महत्वपूर्ण समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जब तक कि पेशेवर चिकित्सा सहायता घटनास्थल पर न पहुंच जाए।

हमें प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण में क्या सीखते हैं?
हमारे संस्थान में आयोजित प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण एक व्यापक कार्यक्रम है जो विभिन्न आपात स्थितियों से निपटने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करता है। इसमें शामिल हैं:

1. सीपीआर (CPR) और दम घुटने पर बचाव (Choking Rescue):
• हृदय गति रुकने पर छाती पर दबाव कैसे देना है और कृत्रिम श्वसन कैसे देना है।
• किसी के गले में कुछ फंस जाने पर हेम्लिच पैंतरेबाज़ी (Heimlich Maneuver) का उपयोग कैसे करें।

2. रक्तस्राव नियंत्रण और घाव की देखभाल:
• छोटी खरोंच से लेकर गंभीर कट तक, विभिन्न प्रकार के घावों को साफ करना और पट्टी बांधना।
• भारी रक्तस्राव को नियंत्रित करने के लिए दबाव डालना।

3. हड्डियों का टूटना (Fractures) और मोच (Sprains):
• टूटी हुई हड्डी या मोच वाले अंग को कैसे स्थिर करें ताकि आगे और नुकसान न हो।
• फर्स्ट एड किट में उपलब्ध स्प्लिंट या improvised सामग्री का उपयोग करना।

4. जलना (Burns) और झुलसना (Scalds):
• विभिन्न डिग्री के जलने का आकलन कैसे करें।
• जले हुए हिस्से को ठंडा करना और संक्रमण से बचाना।

5. सदमा (Shock):
• सदमे के लक्षणों को पहचानना।
• रोगी को स्थिर करने और चिकित्सा सहायता की प्रतीक्षा करने के लिए आवश्यक कदम उठाना।

6. अन्य स्थितियाँ:
• मधुमेह संबंधी आपात स्थिति।
• मिर्गी का दौरा (Seizures)।
• साँप का काटना या कीड़े का डंक।
• बिजली का झटका।

निष्कर्ष: एक जागरूक समुदाय, एक सुरक्षित कार्यस्थल
प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण केवल कुछ तकनीकों को सीखने से कहीं अधिक है। यह हमें आत्मविश्वास देता है, हमें शांत रहना सिखाता है, और हमें उस समय कार्य करने के लिए सशक्त बनाता है जब अन्य लोग घबरा सकते हैं। यह हमें एक दूसरे की देखभाल करने और अपने समुदाय में सकारात्मक प्रभाव डालने का अवसर देता है।

हमारे संस्थान का लक्ष्य सिर्फ व्यावसायिक सफलता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा कार्यस्थल बनाना है जहाँ हर कर्मचारी सुरक्षित महसूस करे और जानता हो कि आपातकाल में उनकी मदद के लिए कोई है। प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान हमें इसी लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करता है।

याद रखें: "सजगता ही सुरक्षा की नींव है।"

"प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान,
बचा सकता है किसी की जान।
दुर्घटना से बचाव है बेहतर,
प्राथमिक उपचार है सबसे बढ़कर!"

मेरी एक्यूपंक्चर यात्रा

श्रीमती परिमला प्रभला , क.का.प्र.

जीवन में जब भी हम किसी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति से जुड़ते हैं, तो वह केवल शरीर का नहीं, मन और आत्मा का भी उपचार बन जाती है। मेरी एक्यूपंक्चर की यात्रा कुछ ऐसी ही रही है।

शुरुआत कैसे हुई?

इस यात्रा की शुरुआत मैंने एक मरीज़ के रूप में की थी। किसी पुराने दर्द और तनाव से राहत पाने के लिए मैंने एक्यूपंक्चर उपचार करवाना शुरू किया। जब मैंने इसके प्रभाव को खुद पर अनुभव किया – बिना किसी दवा के, केवल सूक्ष्म सुइयों से शरीर के संतुलन को बहाल करते हुए – तो मेरी जिज्ञासा बढ़ी। मैंने ठान लिया कि इसे सिर्फ अनुभव नहीं, बल्कि समझना और सीखना भी है।

हर सप्ताह के अंत में, जब लोग छुट्टी मनाने या आराम करने की योजना बनाते हैं, मैंने एक अलग रास्ता चुना – एक्यूपंक्चर सीखने का। यह यात्रा शुरू हुई डॉ. भरत नामक एक्यूपंक्चर वैद्य मार्गदर्शन में, जिनका अनुभव और समर्पण इस प्राचीन चीनी चिकित्सा पद्धति को समझने में मेरी सबसे बड़ी शक्ति बना।

एक्यूपंक्चर की पढ़ाई

डॉ. भरत का पढ़ाने का तरीका बेहद व्यावहारिक और छात्र-केंद्रित है। हर शनिवार और रविवार हम न केवल थ्योरी पढ़ते हैं, बल्कि वास्तविक जीवन में बिंदुओं की पहचान करना और सुइयों का प्रयोग सीखते हैं।

उन्होंने हमें समझाया कि कैसे हमारे शरीर में 365 प्रमुख एक्यूपंक्चर पॉइंट्स होते हैं, और कैसे इनमें से प्रत्येक बिंदु किसी न किसी अंग या ऊर्जा पथ से जुड़ा होता है।

प्रैक्टिकल पॉइंट लोकेशन

हर सप्ताहांत का सबसे रोचक हिस्सा होता है – प्रैक्टिकल सेशन। इसमें हम एक-दूसरे पर पॉइंट्स की लोकेशन का अभ्यास करते हैं

– जैसे कि एलI4 (हाथ का पॉइंट), एसटी36 (घुटने के नीचे), या जीबी20 (गर्दन के पीछे)। यह न केवल हमारी जानकारी को बढ़ाता है, बल्कि हमें आत्मविश्वास भी देता है कि हम किसी मरीज पर कार्य कर सकते हैं।

यह क्यों उपयोगी है?

एक्यूपंक्चर एक संपूर्ण उपचार पद्धति है। यह केवल लक्षणों को नहीं, बल्कि बीमारी की जड़ को ठीक करने में मदद करती है। यह:

- दर्द प्रबंधन में अत्यंत कारगर है (जैसे कमर दर्द, सिरदर्द, घुटने का दर्द आदि),
- तनाव, चिंता और अनिद्रा में राहत देती है,
- शरीर की ऊर्जा को संतुलित करती है (क्यूआई बैलंसिंग),
- और यह दवाओं के बिना उपचार का एक सुरक्षित माध्यम है।

मेरा अनुभव

इस यात्रा ने मुझे केवल एक नई चिकित्सा प्रणाली नहीं सिखाई, बल्कि धैर्य, संवेदनशीलता और सूक्ष्म दृष्टिकोण भी सिखाया। एक्यूपंक्चर सीखना मेरे लिए आत्म-विकास और सेवा का माध्यम बन गया है। सबसे खास बात यह रही कि जब मैंने आत्मविश्वास से भरकर अपने पहले उपचार की शुरुआत की, तो वे मेरे अपने ही लोग थे — मेरे पति, मेरी मेड, जिसे घुटनों में दर्द रहता था; और मेरे ऑफिस के अकाउंटेंट, जिन्हें सिरदर्द की शिकायत होती थी। जब मैंने इन तीनों पर पॉइंट्स लगाकर उपचार किया और उन्हें राहत मिली, तो मेरे भीतर यह विश्वास गहराया कि एक्यूपंक्चर केवल सीखने की चीज़ नहीं है, बल्कि इसे अपनाकर हम दूसरों का जीवन भी बेहतर बना सकते हैं।

चिकित्सा केवल ज्ञान नहीं, एक साधना है

डॉ. भरत ने मुझे सिर्फ एक्यूपंक्चर के बिंदु नहीं सिखाए, बल्कि यह भी सिखाया कि उपचार करते समय सोच कैसी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें मरीज का इलाज करुणा और नम्रता से करना चाहिए। हमें यह अहंकार नहीं होना चाहिए कि "मैं इलाज कर रहा हूँ", बल्कि यह समझना चाहिए कि यह सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है — हम तो बस एक माध्यम हैं।

मैं हर दिन ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे एक माध्यम बनाए — ताकि मैं कम से कम कुछ मरीजों का उनके कर्मों के अनुसार दर्द कम कर सकूँ। यही भावना मेरे अंदर सेवा की भावना को और मजबूत करती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

हिंदी में अर्थ:

- सभी सुखी रहें,
- सभी निरोग रहें,
- सभी शुभ देखें (सद्भावना अनुभव करें),
- और किसी को भी दुःख न हो।

"मैं केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समस्त संसार के लिए शुभ चाहती हूँ।

विशिष्ट अतिथियों का आगमन

एवीएनएल की इकाई आ.नि.मेदक में अपने दौरे के दौरान श्री संजय सेठ, माननीय रक्षा राज्य मंत्री को उत्पादों का विवरण देते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

लेफ्टिनेंट जनरल कुलदीप सिंह बराड़, पीवीएसएम, एवीएसएम, जीओसी/डीबी एरिया के दौरे के दौरान उनका स्वागत करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, साथ में खडे हैं श्री बी. पट्नायक, निदेशक/मा.सं. एवं श्री सत्यव्रत मुखर्जी, निदेशक/संचालन

विभाग संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष माननीय श्री तिरुच्चि शिवा सांसद/ राज्यसभा का स्वागत करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मेजर जनरल तरुण अग्रवाल, अपर महानिदेशक/तक., सेना एवं ए. अन्बरसु, भा.प्र.से., अपर सचिव एवं म.नि. (अधिग्रहण) के दौरे के दौरान उनके साथ विचार-विमर्श करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, साथ में बैठे हैं श्री सत्यव्रत मुखर्जी, निदेशक/संचालन

डॉ. अजय कुमार, भा.प्र.से., जेएस एवं एएम (एलएस) के दौरे के दौरान उनका स्वागत करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

रूसी प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक

राष्ट्रीय पिछड़े वर्ग वित्तीय विकास निगम के उप महाप्रबंधक श्री सुजय के साथ समझौता ज्ञापन करते हुए श्री आर.के. बल, महाप्रबंधक

प्रशिक्षण एवं विकास क्षेत्र में वेल टेक इंजिनीयरिंग कॉलेज के साथ समझौता ज्ञापन करते हुए श्री आर.के. बल, महाप्रबंधक

प्रशिक्षण एवं विकास क्षेत्र में तकनीकी शिक्षा निदेशालय, (डीओटीई), चेन्नई के साथ समझौता ज्ञापन करते हुए श्री बी. कृष्णमूर्ति, महाप्रबंधक

सीआईआई दक्षिणी क्षेत्र एमएसएमई खरीद शिखर सम्मेलन में एवीएनएल संगठन का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री धर्मेंद्र कुमार मदान, मुख्य महाप्रबंधक

'गैस नाइट्राइडिंग प्रक्रिया के अपशिष्ट उत्पाद के उपयोग की अवधारणा' पर अपने अग्रणी कार्य के लिए स्वर्ण मयूरी पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अनुराग कुमार शर्मा, मुख्य महाप्रबंधक/इं.नि.आ.

तंजानिया में आयोजित मिनी डिफेंस एक्स्पो में एवीएनएल उत्पादों का अवलोकन करते हुए तंज़ानिया के रक्षा मंत्री, साथ में हैं भारत के उच्चायुक्त

हँसना मना है

डॉक्टर (मरीज से): घबराओ मत राकेश। यह बहुत छोटा ऑपरेशन है।
मरीज : थैंक्यू डॉक्टर। पर मेरा नाम राकेश नहीं है।
डॉक्टर : मुझे पता है, राकेश मेरा नाम है।
டாக்டர் (நோயாளிடம்): பயப்படாதே ராகேஷ்... இது ரொம்ப சின்ன ஆபரேஷன் தான்.
நோயாளி: தேங்க்ஸ் டாக்டர். ஆனா என் பேர் ராகேஷ் இல்லையே?
டாக்டர்: எனக்குத் தெரியும்... ராகேஷ்ன்றது என் பேரு தாம்பா!

ज्योतिष : तेरा नाम विमल है ?
विमल :जी
ज्योतिष : तेरे दस साल का बेटा है। तुमने 10 किलो गेहूँ खरीदे हैं।
विमल : अरे आप तो अंतर्यामी हो
ज्योतिष : गधे, अगली बार कुंडली लाना, रेशन कार्ड नहीं
ஜோதிடர்: உன் பேரு விமல் தானே?
விமல்: ஆமாங்க ஐயா!
ஜோதிடர்: உனக்கு பத்து வயசுல ஒரு மகன் இருக்கான். அப்புறம் நீ இன்னைக்கு 10 கிலோ கோதுமை வாங்கியிருக்க... சரியா?
விமல்: அடேங்கப்பா! நீங்க நிஜமாவே ஞானி தான் சாமி! எப்பூடி?
ஜோதிடர்: டேய் கழுதை... அடுத்த தடவை வரும்போது ஜாதகத்தை எடுத்துட்டு வா, ரேஷன் கார்டை இல்ல!

भगवान: कौन-सा वर चाहिए वत्स
भक्त : एक नौकरी, एक बड़ी-सी गाड़ी और उसमें लड़कियाँ
भगवान : तथास्तु
भक्त : क्या भगवान ? मैं वर पा कर खुश हुआ, लेकिन आपने मुझे गर्ल्स कॉलेज में बस ड्राईवर बना दिया ?
கடவுள்: மகனே, உனக்கு என்ன வரம் வேண்டும்?
பக்தன்: எனக்கு ஒரு வேலை வேணும், ஒரு பெரிய வண்டி வேணும், அதுல நிறைய பொண்ணுங்க இருக்கணும்!
கடவுள்: அப்படியே ஆகட்டும்!
பக்தன்: என்ன கடவுளே இது? வரம் கிடைச்சதுன்னு சந்தோஷப்பட்டா... என்னை ஒரு லேடீஸ் காலேஜ் பஸ் டிரைவர் ஆக்கிட்டீங்களே?!

मोबाइल – (नाटक)

श्रीमती लिंडा जोसफिन, सहायक

यह कहानी एक ऐसे परिवार की है जहाँ जोशी (पापा) अपने दोनों मासूम बच्चों—बेटी श्रुति (16 वर्ष) और बेटे मुन्ना (10 वर्ष)—के साथ रहते हैं। कुछ वर्ष पहले उनकी पत्नी उमा का निधन हो चुका है। जोशी एक जिम्मेदार और स्नेही पिता हैं, जो अपने बच्चों की परवरिश पूरे प्रेम और समर्पण से कर रहे हैं।

दृश्य 1- घर का आंगन

श्रुति और मुन्ना खेल रहे हैं।

जोशी (पापा): श्रुति बेटा, यह देखो, तुम्हारे लिए क्या लाया हूं।

श्रुति (खुशी से): मोबाइल फोन! धन्यवाद पापा!

मुन्ना (जिज्ञासापूर्वक):और मेरे लिए?

पापा (प्यार से):तुम भी दीदी की तरह स्कूल में अव्वल आओ, फिर जो चाहो, दिलाऊंगा।

दृश्य -2

श्रुतिः- अपने मोबाईल फोन में ।

मुन्ना :- दीदी चलो ना खेलते हैं।

श्रुति :- (झिडक कर) मुझे तंग मत कर.. भाग यहाँ से।

मुन्ना :- (उदास होकर) वहाँ से चला जाता है।

मुन्ना :-(पापा से) पापा देखिए ना .... दीदी अब मेरे साथ न खेलती है और न ही ढंग से बात करती है। जबसे आपने उन्हें मोबाइल फोन लेकर दिया है तब से वह मुझसे बात ही नही करती है।

(मुन्ना उदास होकर ...) मुझे मम्मी की याद आ रही (मुन्ना बिलकते हुए)

पापा :- (आश्वासन देते हुए...) शांत हो जाओ बेटा, ठीक हो जाएगा। । अभी नया मोबाईल है ना, थोडे दिन जरा उकसित होकर देखेगी जब उससे ऊब जाएगी सब कुछ फिर ठीक हो जायेगा ।

दृश्य-3 -

मोबाईल में मग्न श्रुति... पापा की पुकार को अनसूनि कर देती हैं
मुन्ना :- दौडकर दीदी... पापा आपको बुला रहे हैं।
श्रुति :- चल हट पापा से बोलो मैं बिज़ी हूँ अब नहीं आ सकती हूँ...
पापा :- (कमरे में आते हुए) श्रुति बेटा आकर खाना खा लो ना देखो बहुत देर हो रही है.... मुन्ना भूखे ही तुम्हारा इंतजार कर रहा है....
श्रुति :- (चीखती हुई) अरे पापा.... आप दोनों खाना क्यों खा लो ना .... मैं बाद में खा लूँगी जब देखो मुझे तंग करते रहते हैं।
पापा :- (प्यार से) बेटी हम तीनों हमेशा एक साथ ही बैठकर खाना खाते हैं ना..... माँ जब हमारे साथ थी तब से हम सब एक साथ ही खाना खाते हैं ना, अब क्या हो गया तुम्हें?
श्रुति :- (चिढ़ती हुई) अरे पापा, अब माँ नहीं रहीं ना? फिर पुरानी बातों को क्यों उखाड रहे हो .....क्या रट लगा रखी है..... आप जाओ में बाद में खा लूंगी। (पापा और मून्ना को कमरे से बाहर करते हुए जोर से दरवाज़ा बंद कर देती है।)

दृश्य-4

श्रुति मोबाइल में इतना डूब जाती है कि अपने भाई और पापा से दूर होने लगती है। घर का वातावरण बदल जाता है—मासूम मुन्ना उदास रहता है और पापा चिंतित हो उठते हैं।

खाने के मेज़ पर दुखी बैठे पापा और मुन्ना... बेमन से खाते हुए...
पापा :- शायद मैंने उसे मोबाइल तोहफे में देकर गलती तो नहीं कर दी ?
मुन्ना : - हाँ पापा जब से मोबाईल हाथ में आया है दीदी तो बिलकुल बदल सी गयी है।
मुझसे प्यार तो दूर... बात भी नहीं करती।

दृश्य -5

(अगले दिन सुबह का दृश्य)

(मुन्ना और श्रुति स्कूल के लिए तैयार हो जाते हैं..... मुन्ना हर रोज़ की तरह पापा को चूमकर टाटा दिखाते अपनी दीदी के पीछे दौडा चला जाता है... पर श्रुति अपने पापा से बिना कुछ कहे ही मोबाईल देखती हुई स्कूल के लिए निकलती है।)

पापा :- (उसे टोकते हुए) श्रुति स्कूल में मोबाईल ले जाना मना है। वैसे भी अगर गुम गयी तो? घर पर रख कर स्कूल जाओ बेटा.....
श्रुति :- (अकड दिखाती हुई) पापा, मुझे खामखाँ भाषण देना बंद करिए, मुझे पता है कि क्या करना है।

दृश्य-6

परिक्षा का समय था
पापा :- श्रुति मोबाइल रखकर पढाई करो बेटा तुम्हारी परिक्षा है ना अब तुम दसवीं कक्षा में हो...

तुम्हारे इस साल का अंक बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस बार भी तुम अव्वल नंबर लेना। इस पापा की यही इच्छा है।
श्रुति (बिना कुछ कहे अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर देती है)

दृश्य-7

(अगले दिन दोपहर में... जोशीजी के दफ्तर में उनके पडोसी का फोन आता है...)
पडौसी :- जोशी जी मैं शर्मा बोल रहा हूँ .....
जोशी- हाँ शर्मा जी कुछ खास बात है क्या?, बताईए आपने मुझे अचानक कैसे याद किया?
शर्माः- मैं अपने बेटे को स्कूल में लेने गया था तो देखा की आपका बेटा मुन्ना गेट के बाहर अकेला खड़ा रो रहा है। पूछा तो पता चला कि श्रुति उसे स्कूल में ही छोड़ कर घर चली गई। अजीब बात है। श्रुति ने पहले कभी ऐसा नहीं किया। क्या हो गय है उसे ?
जोशीः (अपनी बेटी की लापरवाही को छुपोते हंए) अरे वो अब दसवीं कक्षा में है ना तो पढ़ा ई के टेंशन में ऐसा हो गया होगा। खैर आपने मुन्ना को घर छोड़ दिया है ना ?
शर्माः- हाँ जोशी जी
जोशी :- आपका बहुत धन्यवाद। आपसे शाम को मिलता हूँ। (फोन नीचे रखते हुए बहुत ही चिन्तित होकर बैठ जाते हैं।)

दृश्य 8

दफ्तर से शाम को 7:00 बजे घर पहुंचते ही

जोशी:- श्रुति श्रुति (पुकारते हुए)
श्रुति:- जी पापा
पापा :-आज तुम मुन्ना को स्कूल पर छोड आई? क्यों? क्या हो गया है तुम्हें ? ऐसा तुमने कभी नहीं किया ?
श्रुतिः- (ऊंची आवाज़ में) वो घर पहुँच गया ना.... इसमें इतना बखेडा क्यों खड़ा कर रहे हो ?

जोशीः- बेटी का रवैया देखकर उदास होकर वहाँ से चले जाते हैं।

दृश्य – 9

एक हफ्ते बाद
स्कूल के बाहर खड़ी श्रुति की सहेलीयों की मम्मी
रीना :- रेखाजी, इस बार मेरी बेटी हेमा क्लास में प्रथम आई है सभी विषयों में उसके अव्वल नम्बर आए हैं।
रेखा :- मेरी बेटी के भी अच्छे नम्बर आए हैं।
शीला :- सुना है ? श्रुति 3 सबजेक्ट में फेल हो गई है?
रीना :-अरे हों..... अब वो पढ़ाई में कमजोर हो गई है...कुछ भी कहो, घर-परिवार को एक स्त्री ही बखूबी से संभाल सकती है। एक पिता क्या जाने बच्चों को कैसे पालते हैं? आदमी स्त्रीयों की बराबरी इस विषय में कभी नहीं कर पायेंगे।
सभी स्त्रीयाँ हँसती हुई श्रुति की तरफ देखती हैं और फिर से ज़ोर से हंस देती हैं। श्रुति को बहुत बुरा लगता है.... वो अपने भाई के साथ घर चली जाती है।

दृश्य -10

धीरे-धीरे श्रुति समझ लेती है कि उसका ध्यान पढ़ाई से हट गया है। परीक्षा में असफल होने पर उसे अहसास होता है कि उसने पापा का दिल दुखाया है।

शाम को पापा घर पर आते ही श्रुति ने उन्हें अपना मोबाइल सौंप दिया और उनसे माफी मांगी। वह खूब रोई और अपने पापा से अपने 3 विषय में फेल होने की बात बताई।

पापा :- (धीमी आवाज़ में पापा उसे ढांढ़स बंधाते हैं और विश्वास जताते हैं।) कोई बात नहीं बेटा, यह तो मासिक परीक्षा ही था, तुम अगली बार खूब मन लगाकर पढ़ो और देखों कि तुम ही क्लास में अव्वल होगी। मुझे तुम पर पूरा विश्वास है।

पापा का प्यार और उस पर रखे हुए भरोसे को देखकर श्रुति बिलक बिलक कर रो पड़ती है और मन ही मन ठान लेती है कि अब वह कभी पापा को निराश नहीं करेगी और दसवीं कक्षा में अव्वल आकर उनका नाम रोशन करेगी। पापा की प्रेम और विश्वास की शक्ति से प्रेरित होकर श्रुति मेहनत करती है

श्रुति : (मन ही मन) मैं यह साबित करूँगी कि एक पापा भी मम्मी की तरह बच्चों की अच्छी देखभाल कर सकते हैं।

दृश्य-11

श्रुति अपने प्यारे भाई मुन्ना के साथ खुशी खुशी खेलती है। और खूब मन लगाकर पढ़ती है। श्रुति पढ़ाई में दिन-रात एक कर देती है और अपनी परिक्षा अच्छी तरह लिखती है।

दृश्य -12

श्रुति बहुत बेचैन है..... आज श्रुति का रिज़ल्ट है।

श्रुति :- पापा आज मेरा रिज़ल्ट है..... मुझे बहुत घबराहट हो रही है।

पापा :- अरे घबराहट किस बात की.... मुझे पता है मेरी बेटी ही अव्वल आएगी (इंटरनेट पर रिज़ल्ट देखते हुए.... खुशी से चिल्ला उठते हैं... श्रुति को गले से लगा लेते हैं....

पापा :- श्रुति मुझे पूरा यकिन था कि तुम ही पूरे स्कूल में अव्वल होगी। धन्यवाद बेटा, एक पापा को इसके अलावा कुछ नहीं चाहिए। (पापा उसे गले लगाते हैं—उनके लिए यही सबसे बड़ा पुरस्कार है।)

श्रुति को जहाँ अपने किये हुए पर शर्मिंदगी थी वहीं अपने पापा को खुश देखकर उसका जी भर आया।

सीख:

मोबाइल एक उपयोगी यंत्र है, लेकिन यदि इसका उपयोग सीमित और सही उद्देश्य से न किया जाए, तो यह व्यक्ति और परिवार दोनों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। संयम और विवेक ही इसके सही प्रयोग की कुंजी है।

संविधान के अनुच्छेद 351
ARTICLE 351 OF INDIAN CONSTITUTION

हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश
Directives for development of Hindi language

विशेष निर्देश
Special Directives

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

It shall be the duty of the Union to promote the spread of the Hindi language to develop it so that it may serve as medium of expression for all the elements of the composite culture of India and to secure its enrichment by assimilating without interfering with its genius, the forms, style and expressions used in Hindustani and in other languages of India specified in the Eighth Schedule, and by drawing, wherever necessary or desirable, for its vocabulary, primarily on Sanskrit and secondarily on other languages.

आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाएँ
Languages specified in Eighth Schedule

असमिया	Assamese	पंजाबी	Punjabi
उड़िया	Oriya	बंगला	Bengali
उर्दू	Urdu	बोडो	Bodo
कन्नड़	Kannada	मणिपुरी	Manipuri
कश्मीरी	Kashmiri	मराठी	Marathi
कोंकणी	Konkani	मलयालम	Malayalam
गुजराती	Gujarati	मैथिली	Mythili
डोगरी	Dogri	संथाली	Santhali
तमिल	Tamil	संस्कृत	Sanskrit
तेलुगु	Telugu	सिंधी	Sindhi
नेपाली	Nepali	हिंदी	Hindi

मुख्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक

महिला दिवस के अवसर पर मुख्यालय में कार्यरत महीला अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

एवीएनएल निगम कार्यालय में अंतर-राष्ट्रीय योग दिवस समारोह सत्र में लगे हुए अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु श्रीमती वाणी राजेश, सहायक को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान मुख्यालय परिसर को साफ करते हुए एवीएनएल के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

एवीएनएल स्थापना दिवस की झलक

स्थापना दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, साथ में हैं श्रीमती रश्मी द्विवेदी, अध्यक्षा/म.क.स.

केक काट कर स्थापना दिवस का उद्घाटन करते हुए श्री प्रतीक किशोर, ओएस (उत्कृष्ट वैज्ञानिक) एवं महानिदेशक(डीजी), एई (आयुध एवं लड़ाकू इंजिनीयरिंग प्रणाली)

स्थापना दिवस के अवसर पर उद्बोधन देते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

स्थापना दिवस के अवसर पर ब्रोशर का विमोचन करते हुए गणमान्य अधिकारीगण

स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का दृश्य

बुरा या खराब समय

श्रीमती गीता पार्थसारथी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यह वाक्य भी सर्वसाधारण के बीच आम हो चुका है कि अब हमारा समय इतना खराब चल रहा है कि हम जो कुछ भी करते हैं वह सब बेकार या खराब हो जाता है। इस समय तो सोने में हाथ डालेंगे तो भी कंक हो जाएगा। समय प्रबंधन के प्रति इस प्रकार का कथन प्रगति के लिए बाधक है।

समय कभी खराब या बुरा नहीं होता। हम ही हैं जो अपने दोष या अक्षमता को उसके ऊपर डालते हैं। समय खराब उन्हीं को लगता है जिन्होंने समय पर कार्यों की योजना नहीं बनाई होती है और समय के अनुसार अपने आपको तैयार नहीं किया है। समय पर हल नहीं जोता गया, फसल नहीं बोई गई और अब पछता रहे हैं कि दूसरों को तो इतनी अच्छी फसल मिली और हमें नहीं।

यदि हम केन्द्रित हो कर समय का उपयोग नहीं करते एवं अपनी योग्यता वाले क्षेत्रों में काम प्राप्त करने की कोशिश नहीं करते- आज यहां कल वहां की निरर्थक भागदौड़ी करते हैं तो बेचारा समय पर सारे दोष लगाने से समय क्या करेगा ?

राम को चैदह वर्ष का वनवास मिला। चैदह वर्ष की अवधि अच्छा-खासा समय होती है। उन्होंने कभी खराब समय का रोना नहीं रोया। बल्कि आसुरी तत्वों का विनाश, राष्ट्र रक्षण जैसे सार्थक दायित्वों से जुड़ कर सीताहरण के दुःखद व बुरे समय को भी अपना अनुकूल बना लिया।

इसी प्रकार पांडवों ने अपने वनवास की अवधि को विभिन्न प्रकारों के देवास्त्रों को जुटाने में अपना समय बिताया। अर्जुन ने पाशुपतास्त्र प्राप्त करने, भीम ने हनुमान जी से युद्ध कला सीखने, नकुल एवं सहदेव ने अश्विन कुमारों से विविध कलाएं सीखने में समय का सदुपयोग किया।

किसी की नौकरी नहीं लग रही, शादी नहीं हो रही तो लोग ऐसी ही भांति-भांति की कामना ले कर ज्योतिषियों के पास जाते हैं। उन्हें लगता है कि कोई रेखा, रत्न या पत्री उसका समय ठीक कर देगी। लेकिन जब तक वे कार्य के साथ पूरे प्रयासपूर्वक न्याय नहीं करते, कोई उनके खराब समय को अच्छा नहीं कर सकता। यदि ऐसा ही होने लग जाए तो न सेना की जरूरत है, न और अन्य प्रयासों की हम अपनी पूरी समस्याएं ज्योतिषियों से ही हल न करवा लेंगे ?

गाँधी जी आत्म कथा को पढ़ने पर हम यह समझ सकते हैं कि कितनी सारी आपत्तियों एवं बाधाओं के बीच विलायत गए। उन्होंने कभी नकारात्मक सोचों का परवाह नहीं किया। उस समय सात समुद्र पार जाना ही खराब माना जाता था फिर भी वे विलायत जाने में सफल हुए। अपनी कमज़ोरियों और तथाकथित खराब समय को अपने अनुकूल बनाया। यदि फस्ट क्लास का टिकट होने पर भी उन्हें फस्ट क्लास में न बैठ कर थर्ड क्लास में बैठना पड़ा तो उन्होंने खराब समय पर दोष नहीं लगाया, परंतु नस्लवाद, रंगभेद, वर्गभेद की समस्या की जड़ तक पहुँचे और विपरीत समय में भी अपने लक्ष्य पर डट कर रहे और अहिंसा मार्ग को अपनाते हुए भारत देश को स्वतंत्रता दिलाने में सफल हुए।

मुट्ठी से फिसलने न दें:-

हम समय को न सहेजें उसे अपनी मुट्ठी से फिसलने दें तो अच्छा समय भी बुरा हो सकता है। हम धन को सहेजते हैं पर समय को नहीं। युद्ध में दो सेनाओं में से एक जीतती है दूसरी हारती है। जीतने वाले के लिए समय अच्छा है। हारने वाले के लिए समय बुरा है। जबकि सही बात है कि समय तो एक ही है, एक जैसा ही है। समय को अच्छा व बुरा मानने-समझने को इस कथन

द्वारा भी समझा जा सकता है। आंख पर जिस रंग का चश्मा लगा लिया जाए, दुनिया उसी रंग की दिखती है। समय भी दुनिया के साथ ऐसा ही है। वह जैसा है वैसा ही रहता है। दुनिया ही उसे रंग-बिरंगे चश्में के जरिए देख कर उस रंग का मानती है।

नेल्सन मंडेला 1962 में बंदी बनाए गए और 1990 में छूटे। जीवन का शानदार समय जेल में बिता दिया। आपके और हमारे हिसाब से तो यह उनके जीवन का सबसे खराब समय था। वास्तव में काल कोठरी का यही समय सशक्त और शक्तिशाली समय था, जिसने नेल्सन मंडेला को असली आकार दिया। 1991 में वे देश के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। 1993 में उन्हें नोबल शांति पुरस्कार से नवाजा गया था।

निर्माण काल

यदि हम अपने बुरे कहे जाने वाले समय की अमरीका के दो बार राष्ट्रपति रहे अब्राहम लिंकन के बुरे समय से तुलना करें तो हमें अपने जीवन में बुरा कुछ भी नहीं लगेगा। उनके पास न रहने का घर था, न पढ़ाई-लिखाई के साधन। लिंकन लोगों से पुस्तकें मांग-मांग कर चूल्हे की आग की रोशनी में पढ़ते थे। नाव पर माल लदाने से ले कर, स्टोर में क्लर्की और डाकखाना कर्मी तक सभी काम उन्होंने किए। घनघोर संघर्ष के बावजूद वकालत पास की। घोड़े पर घूम-घूम कर लोगों के झगड़े निपटाते थे। क्या हमने कभी ऐसा और इतना बुरा समय देखा है ? या इतना कष्ट सहा है ?

जब तक हम समय को अच्छे-बुरे के दायरे में देखेंगे तब तक हम कुएं के मेंढ़क ही बने रहेंगे। हमें लगता रहेगा कि समय बस इसी दायरे में रहता है। भगवद्गीता की इन पंक्तियों को देखें -

यं यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्

जो जिस प्रकार मेरी ओर आता है मैं उसे उसी प्रकार प्राप्त होता हूँ।

जिम्मेदार कौन ?

बुरे या खराब समय का जिम्मेदार कौन हैं? क्या हम अपने भाग्यविधाता स्वयं नहीं बन सकते ? हमारी योजना गलत हो या सही हो हमारा समय-निवेश अविचारित हो तो अच्छा-खासा समय भी बुरा हो सकता है। परीक्षा के ऐन दो-चार दिनों में ही जो पढ़ता हो उसका समय अच्छा कैसे हो सकता है क्योंकि इन दिनों कोई घर आ जाए तो बाधा जैसे लाइट चली जाए तो दिक्कत, तबीयत खराब हो जाए तो पूरा ही बर्बाद। इसकी बजाय जिसकी तैयारी पूरी है उस पर कोई बोझ नहीं पड़ता। घंटा भर बत्ती गुल भी हो गई तो वह उस समय को ऊर्जा संचय में लगा देता है।

जो समय के अनुकूलन का तंत्र विकसित नहीं करते, वे ज्यादातर बुरे समय की भ्रांति का शिकार होते हैं। यह घटना या सच्ची कथा है - एक व्यक्ति बहुत दुःखी था उसके पास जूते नहीं थे। एक दिन उसने एक ऐसा व्यक्ति को देखा जिसके पैर ही नहीं थे। उस व्यक्ति का सारा दुःख पल भर में ही समाप्त हो गया।

समय को हम बुरा बनाते हैं। वह खुद बुरा नहीं होता। लोग स्ट्रीट लाइट में पढ़ कर महान बने हैं। लालबहादुर शास्त्री रोज गंगा तैर कर पढ़ने जाते थे। संघर्ष कष्टदायक नहीं होता। दुःख या बुरा समय नहीं होता। उसका महत्व जो समझ लेते हैं, वे उसे प्यार से अंगीकार करके खुद को निखार लेते हैं। वह पारस है जिस पर परख कर हर कोई सोना बना सकता है।

अतः मित्रों ! समय कभी खराब नहीं होता। कोई चीज़ या वस्तु आपका समय ठीक कर देगी, यदि आपने अपनी तैयारियाँ पूर्ण रूप से करते हैं। यदि आपने परीक्षा की तैयारी नहीं की तो कोई पंडित आपको पास नहीं करा सकता। कोई ग्रह आपकी मदद नहीं कर सकता। अगर यों समय अच्छा हो जाता तो देश में कोई समस्या ही नहीं रहती। बुरा या खराब समय तो केवल हम ही उपयुक्त समय प्रबंधन से ठीक कर सकते हैं।

जीवन कितना ही छोटा हो, समय की बर्बादी से वह और भी छोटा बना दिया जाता है - शेक्सपीयर

डिजिटल डिटॉक्स

श्रीमती वाणी राजेश, सहायक

डिजिटल डिटॉक्स: क्या हमें थोड़े समय के लिए 'ऑफलाइन' होना चाहिए?

"कभी-कभी डिस्कनेक्ट होना ही असली कनेक्शन है"

भूमिका

आज के समय में स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और इंटरनेट हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। सुबह आँख खुलते ही नोटिफिकेशन देखना और रात को सोने से पहले स्क्रीन पर आखिरी बार स्क्रॉल करना — यह अब सामान्य बात हो गई है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इस लगातार ऑनलाइन रहने की आदत का असर हमारी मानसिक, शारीरिक और सामाजिक सेहत पर कैसा पड़ रहा है?
यहीं से आता है एक नया और ज़रूरी शब्द — "डिजिटल डिटॉक्स"।

डिजिटल डिटॉक्स क्या है?

डिजिटल डिटॉक्स का मतलब है कुछ समय के लिए जानबूझकर खुद को डिजिटल डिवाइसेज़ से दूर रखना, यानी मोबाइल फोन, कंप्यूटर, सोशल मीडिया, वीडियो गेम्स, आदि से दूरी बनाना — ताकि हम अपने दिमाग और शरीर को फिर से संतुलित कर सकें।
यह कोई स्थायी त्याग नहीं, बल्कि एक चेतन ब्रेक है — खुद के लिए।

डिजिटल ओवरलोड के दुष्परिणाम

1. तनाव और बेचैनी

बार-बार नोटिफिकेशन चेक करना और "FOMO" (Fear of Missing Out) की भावना मानसिक थकावट को बढ़ाती है।

2. नींद में कमी

स्क्रीन की नीली रोशनी (blue light) हमारे दिमाग के प्राकृतिक नींद चक्र को बिगाड़ती है।

3. एकाग्रता में गिरावट

बार-बार फोन देखने की आदत ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को प्रभावित करती है।

4. रिश्तों में दूरी

वास्तविक बातचीत की जगह वर्चुअल इंटरेक्शन लेने लगते हैं, जिससे भावनात्मक संबंध कमजोर हो सकते हैं।

डिजिटल डिटॉक्स के लाभ

1. मानसिक शांति और स्पष्ट सोच
2. नींद में सुधार
3. परिवार और दोस्तों के साथ अधिक गुणवत्ता वाला समय
4. कार्य और अध्ययन में अधिक एकाग्रता
5. आत्म-अवलोकन और रचनात्मकता में वृद्धि

डिजिटल डिटॉक्स कैसे करें?

1. "नो फोन" टाइम सेट करें

दिन का कुछ समय जैसे सुबह का पहला घंटा या रात का आखिरी घंटा — पूरी तरह फोन-मुक्त रखें।

2. "फास्टिंग ऐप्स" का प्रयोग

ऐसी ऐप्स जो आपको स्क्रीन टाइम लिमिट करने में मदद करें (जैसे फॉरेस्ट, डिजिटल वेलबीइंग आदि)

3. रील्स और स्क्रॉलिंग टाइम सीमित करें

मनोरंजन जरूरी है, लेकिन बिना कंट्रोल के यह समय और ऊर्जा की खपत बन जाता है।

4. "नो-डिजिटल डे" मनाएँ

सप्ताह में एक दिन जैसे रविवार को पूर्ण डिजिटल डिटॉक्स अपनाएं।

वास्तविक जीवन उदाहरण

1. गूगल और एपल के सीईओ तक अपने बच्चों को सीमित स्क्रीन टाइम की सलाह देते हैं।

* यह दिखाता है कि तकनीक बनाने वाले लोग भी इसकी सीमाओं को जानते हैं।

2. कुछ कॉर्पोरेट कंपनियाँ अब "डिजिटल डीटॉक्स रिट्रीट्स" आयोजित करती हैं ताकि कर्मचारी तनावमुक्त हो सकें।

3. दुनिया भर के कई स्कूल 'स्क्रीन-फ्री वीक' मनाते हैं, जहाँ एक सप्ताह तक छात्र डिजिटल डिवाइसेज़ से दूरी बनाकर प्राकृतिक और रचनात्मक गतिविधियाँ करते हैं।

*** युवाओं के लिए प्रेरक संदेश**

"आज का युवा सबसे ज़्यादा कनेक्टेड है, फिर भी सबसे ज़्यादा अकेला महसूस करता है।
इसलिए ज़रूरी है कि कनेक्शन सिर्फ वाई-फाई से नहीं, दिलों से भी हो।"

*** निष्कर्ष: थोड़ी दूरी से रिश्ते गहरे होते हैं**

डिजिटल तकनीक हमारे जीवन को आसान बनाती है, लेकिन अत्यधिक उपयोग हमें अपनी स्वस्थता और मानवीय जुड़ाव से दूर ले जा सकता है।

डिजिटल डिटॉक्स कोई विलासिता नहीं, बल्कि 21वीं सदी में एक आवश्यक मानसिक स्वच्छता है।

कभी-कभी 'ऑफलाइन' जाना ही असल ज़िंदगी से जुड़ने का सबसे बेहतर तरीका होता है।

आख़िरकार, स्क्रीन से हटकर भी एक खूबसूरत दुनिया है — जिसे जीना बाकी है।

*** लेख के अंत में एक छोटा कॉल टू एक्शन**

" सप्ताह एक दिन पूरी तरह 'स्क्रीन-फ्री' रहें।

फोन को साइलेंट रखें, खुद से जुड़े रहें, अपनों के साथ मुस्कुराएं

आप पाएँगे, डिजिटल डिटॉक्स असल में एक 'रिलेशनशिप रिचार्ज' है!

हँसना मना है

बेटा- पापा, मैं एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनूंगा,
फिर आपकी झोली खुशियों से भर दूंगा
पिता- पहले ये बोतलें भरकर फ्रिज में रख, नालायक....
மகன்: அப்பா, நான் ஒருநாள் பெரிய ஆளா வருவேன். அப்போ உங்க வாழ்க்கையை முழுசா சந்தோஷத்தால நிரப்புவேன்!
அப்பா: அதெல்லாம் அப்புறம் பாத்துக்கலாம்... முதல்ல இந்த பாட்டில்கள்ல தண்ணிய நிரப்பி பிரிட்ஜ்ல வைடா போக்கத்தவனே...

एक औरत ने मंदिर में अपने पति के लिएमन्नत मांग कर धागा बांधा,
फिर सोच कर एकदम से धागा वापस खोल दिया।
पति- धागा क्यों खोल दिया?
पत्नी- आपके लिए मन्नत मांगी थी कि आपकी सारी मुसीबतें दूर हो जाएं, फिर ख्याल आया कही मैं ही न निपट जाऊं....
ஒரு பெண் தன் கணவனுக்காகக் கோவிலில் ஒரு கயிறு கட்டி வேண்டிக்கொண்டாள். ஆனால் சட்டென ஏதோ யோசித்து, உடனே அந்தக் கயிற்றை அவிழ்த்துவிட்டாள்.
கணவன்: ஏன் கயிற்றை அவிழ்க்கிறாய்?
மனைவி: உங்கள் கஷ்டங்கள் எல்லாம் ஒழிந்து போக வேண்டும் என்று வேண்டிக்கொண்டேன். அப்புறம் தான் யோசித்தேன்... ஒருவேளை முதல் கஷ்டமா நானே ஒழிஞ்சு போயிட்டா என்ன பண்றதுன்னு!

चिंटू केले खरीदने गया
चिंटू-एक केला कितने का है भाई ?
दूकानदार- दस रुपये का है
चिंटू-चार रुपये में दे दे
दूकानदार – चार रुपये में छिलका दूँगा
चिंटू-ये ले छह रुपये सिर्फ केला दे दे छिलका तू रख ले
சிண்டு: அண்ணே, ஒரு வாழைப்பழம் எவ்வளவு?
கடைக்காரர்: பத்து ரூபாய் தம்பி.
சிண்டு: நாலு ரூபாய்க்கு கொடுப்பீங்களா?
கடைக்காரர்: நாலு ரூபாய்க்கு வாழைப்பழத் தோல் தான் கிடைக்கும்.
சிண்டு: இந்தாங்க ஆறு ரூபாய்... பழத்தை மட்டும் என்கிட்ட குடுத்துட்டு, தோலை நீங்களே வச்சுக்கோங்க!

कविता

श्रीमती आर. सुजा, क.का.प्र.

तुम राग की रेखा

मूल कविता-मुरुकन कटक्कड़ा

अनुवादः श्रीमती आर. सुजा, क.का.प्र.

रेणुका, तुम राग की रेखा, नीले सपनों की पराग।
बिछड़ते पल की डाली से गिरे दो पत्ते—हम दोनों।
रेणुका, हम मेघ-कण, क्षणिक सौंदर्य के रंग।
इंद्रधनुष के नीचे विरह के श्याम घन।

बिछड़ते हैं दो नदियाँ, बहते हैं दूर-दूर।
तुम शिला-सी जमी, मैं सूखा, मरण-भूर।
क्या दूँ तुम्हें यादों में, बस एक शब्द—"याद रखना"।
फिर कहीं मिलें कभी, बस यही सपना।

कल की आशा में, सिंदूरी फूल बनें।
रेणुका, हम छायाएँ, स्वप्न बिना तनें।

हम दिन के रंग, स्मृति और निराशा।
फिर मिलते संध्या में, मौन आँखों की भाषा।
तुम भरती हो मुझमें, अपनी दृष्टि की बूँद।
प्रेम है भ्रम, शब्दों की क्रिस्टल गूँज।

कभी टूटते हैं हम, अनजाने खोते हैं।
संध्या भी ढली, छाया भी रोते हैं।
रूपहीन जंगल, मौन की परछाई।
दिन सूख गया, क्रोध भी सड़ाई।

पीछे से पुकार, या प्रेम की हवा।
दुखी इच्छाओं से बिखरते हैं सदा।
क्षण भर का सपना, भीगी आँखों का रंग।
रेणुका, तुम राग की रेखा, नीले सपनों की पराग।

सुंदर जीवन

सादगी में सुख है, हर पल में रस है।
ताज़ा रस पी लो, शांति से जी लो।
भोर की सैर हो, धूप की बौछार हो।
तन-मन मुस्काए, ऊर्जा भर जाए।

ध्यान में रम जाओ, श्वासों को अपनाओ।
प्राणायाम करो, भीतर को भरो।

तन है प्रकृति का दान, रखो इसका सम्मान।
प्रतिक्रिया में ज्ञान, यही जीवन का गान।
जीवन है एक खोज भरी, पहेली सी उलझी, रहस्य भरी।
भीड़ में खुद को पाना है, सही जगह पर जाना है।

अंतर की आवाज़ सुनो, सच्चे सुख की राह चुनो।
शांति वहीं, जहाँ मन हँसे, सुख वहीं, जो दिल को बसे।

सुनो उस अंतर्मन की बात, जो दे सच्चे सुख का साथ।
शांति वही, जो भीतर जागे, सुख वही, जो मन को लागे।

राजभाषा गतिविधियाँ

श्रीमती सुशीला द्विवेदी, वरिष्ठ साहित्यकार की किताबें 'रेशम का कीड़ा' एवं 'मंथन' का विमोचन करती हुई डॉ. चिट्टि अन्नपूर्णा, अध्यक्षा/हिन्दी विभाग, मद्रास विश्व विद्यालय

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु शील्ड प्रदान करती हुई डॉ. चिट्टि अन्नपूर्णा, अध्यक्षा/हिन्दी विभाग, मद्रास विश्व विद्यालय

एवीएनएल द्वारा प्रायोजित न.रा.का.स. बैठक का दृश्य

दि.20.06.2025 को एवीएनएल द्वारा प्रायोजित हिन्दी नाटक प्रतियोगिता में स्वागत भाषण देते हुए श्री सौरभ अग्रवाल, उप म.प्र.

हिन्दी नाटक प्रतियोगिता में श्री शेख कमाल साहेब, मु.म.प्र./एफसीआई से एवीएनएल टीम के साथ सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सौरभ अग्रवाल, उप म.प्र.

मुख्यालय की विभिन्न गतिविधियों की झलक

तमिलनाडु रक्षा उद्योग सम्मेलन में संबोधन करते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित साइकिल रैली में भाग लेते हुए श्री संजय द्विवेदी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एवीएनएल ने सीएसआर पहल के तहत तेनकासी जिले के कलक्ट्रेट स्थित जीडीपी हाल में आयोजित समारोह में दिव्यांगजनों को कृत्रिम उपकरण प्रदान किया जिसका दृश्य

स्वच्छता पखवाड़े के अवसर पर मुख्यालय परिसर को साफ करने के लिए एकत्रित हुए अधिकारीगण

नशा मुक्त अभियान के तहत शमथ लेते हुए एवीएनएल के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

अग्नि सुरक्षा दल द्वारा व्यावहारिक प्रशिक्षण

शनिवार के बाद रविवार क्यों आता है?

श्री विक्रांत मिश्रा, क.का.प्र.

हमारे जीवन का समय सप्ताहों में विभाजित है, अर्थात 7 दिन।

रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार

कुछ का नाम खगोलीय पिंडों के नाम पर रखा गया है, जबकि अन्य का नाम यूनानी देवताओं के नाम पर रखा गया है और फिर एक बहुत ही विशिष्ट क्रम के साथ जिसका पालन पूरी दुनिया करती है।

क्या आपने कभी सोचा है,
दिनों के नाम किसने रखे?
उन्हें इस तरह किसने व्यवस्थित किया?
हफ़्ते में सिर्फ़ 7 दिन ही क्यों होते हैं?

जब आप इंटरनेट पर खोज करेंगे, तो सर्च इंजन आपको मिस्रियों, बेबीलोनियों, यूनानियों आदि के जवाबों से भर देगा, और हो भी क्यों न? जैसा कि हम सभी को सिखाया गया है कि उन्होंने भारतीय खगोल विज्ञान को कैसे प्रभावित किया। आख़िरकार, अंग्रेजी का "hour" शब्द ग्रीक शब्द "होरा" से लिया गया है।

सच में नहीं, इन सबका कोई सबूत नहीं है। बिल्कुल भी नहीं।

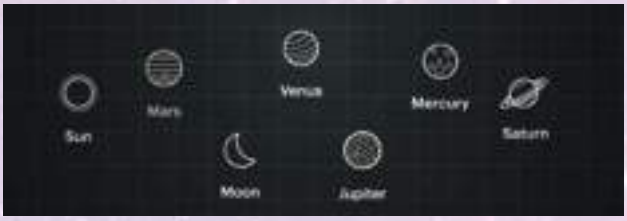

इंटरनेट पर दिखने वाले उन सभी गंभीर व्यक्तित्वों की तस्वीरों ने ऐसा कुछ नहीं किया। पश्चिम ने बस उन्हें श्रेय दे दिया और हमने बिना जाँचे-परखे उन सब पर यकीन कर लिया।

"Hour" शब्द "होरा" से बना है। लेकिन "होरा" शब्द स्वयं संस्कृत शब्द "अहोरात्र" (स्रोत: सूर्य सिद्धांत) से लिया गया है। इस पुस्तक में भारतीय खगोल विज्ञान पर बेहतरीन सामग्री है।

इसमें लिखा है
"नंगी आँखों से दिखाई देने वाले सात ग्रहों को व्यवस्थित करें,
सबसे धीमी से सबसे तेज़ तक और इसे एक अनुक्रम कहें
दिन के घंटों की एक सूची बनाएँ। क्रमानुसार प्रत्येक घंटे को एक

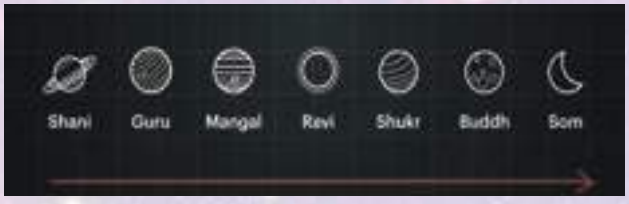

ग्रह निर्दिष्ट करना शुरू करें। जब आप नीचे पहुँच जाएँ, तो उसे अगले दिन तक ले जाएँ। जिस ग्रह को दिन का पहला घंटा मिलता है, उसे दिनपति कहते हैं। उस ग्रह का देवता उस दिन का भी देवता बन जाता है। इस प्रकार दिन को उनके वैदिक नाम मिलते हैं।"

होरा	दिनपति						
1st	**शनि**	**रवि**	**सोम**	**मंगल**	**बुद्ध**	**गुरु**	**शुक्र**
2nd	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध
3rd	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम
4th	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि
5th	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु
6th	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
7th	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
8th	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र
9th	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध
10th	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम
11th	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि
12th	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु
13th	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
14th	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
15th	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र
16th	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध
17th	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम
18th	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि
19th	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु
20th	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
21st	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
22nd	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र
23rd	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुद्ध
24th	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम

अब जब आप अनुक्रम पर ध्यान देंगे, तो यही सप्ताह के दिनों के वास्तविक अनुक्रम का रहस्य है जिसका पालन पूरी दुनिया करती है।

लेकिन फिर, मंगलवार को अंग्रेजी में 'ट्यूस डे' क्यों कहा जाता है, 'मार्स डे' क्यों नहीं? देखिए, वैदिक दिनों के नाम वैदिक देवताओं के नाम पर रखे गए थे। जब भारत से लोग बाहर गए, तो दिन भी चले गए और यूनानियों, रोमनों आदि ने स्थानीय देवताओं के नाम पर रख दिए और अंततः अंग्रेजी नामों का जन्म हुआ।

Vedic वैदिक	Greeks	Romans	Norse	Germanic Tribes	English
Ravi /रवि	Helios	Sol	Sunnudagr	Sun	Sunday
Som/ सोम	Selene	Luna	Mánadagr	Moon	Monday
Mangal/मंगल	Ares	Mars	Tysdagr	Tiwaz	Tuesday
Budhh/बुद्ध	Hermes	Mercury	Óðinsdagr	Wodanaz	Wednesday
Guru/गुरु	Zeus	Jupiter	Þórsdagr*	Thor	Thursday
Shukra/शुक्र	Aphrodite	Venus	Frjádagr	Frige	Friday
Shani/शनि	Cronus	Saturn	Laugardagr	Saturn	Saturday

*पुराने नॉर्स अक्षर Þ से एक कठोर “थ” ध्वनि निकलती है। इसलिए छोटा नाम थॉर पड़ा। अब, उत्साह बढ़ रहा है। वाह, एवेंजर्स आखिरकार सूची में शामिल हो गया। इसी तरह, नॉर्स पौराणिक कथाओं के पात्र ओडिन (बुद्धवार) और फ्रिग्गा (शुक्रवार) के लिए भी यही बात लागू होती है।

हज़ार साल बाद, अंग्रेजों ने हमें यह सिखाया।
लेकिन, भारतीय खगोलशास्त्र आमतौर पर उस दिन को 30 मुहूर्तों में बाँटता है। ये 24 घंटे कहाँ से आते हैं?

अब, हर कोई खुशी से उछल पड़ेगा और जवाब देगा।

“देखो... यूनानियों ने तुम्हें यही दिया था।”

लेकिन दुर्भाग्य से... यह नहीं है।

श्रीमद्भागवतम् प्राचीन काल की बात करता है जब दिन 30 नहीं, बल्कि 24 भागों में बँटे होते थे।

यहीं से होरा को दिन का 24वाँ भाग कहा जाता है। यहीं से ग्रीक शब्द होरा की उत्पत्ति हुई है। लेकिन यह सिर्फ सूर्य सिद्धांत, या श्रीमद्भागवतम इन स्थितियों के बारे में बात नहीं कर रहा है। “आर्यभटीयम्” पुस्तक भी इसी व्यवस्था की बात करती है। (स्रोत आर्यभटीय, कालक्रियापाद 16)

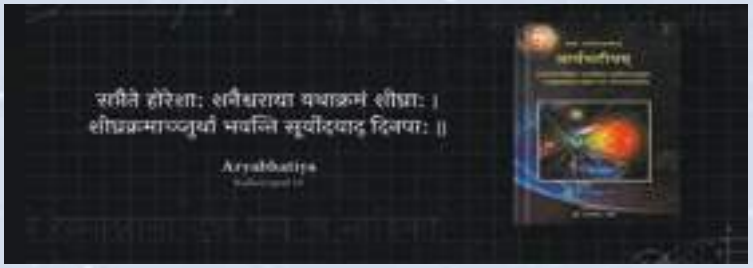

दुर्भाग्य से, भारत के शिक्षा बोर्ड यूनानियों, मायाओं, बेबीलोनियों, असीरियनों, मिस्रियों और रोमनों के महान योगदानों को संकलित करने में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने जानबूझकर वैदिक भारत के भारतीय खगोल विज्ञान में दिए गए विशाल योगदान को नज़रअंदाज़ कर दिया। लेकिन, किसी न किसी बिंदु से शुरुआत या प्रयास तो करना ही होगा। इसे अब कथा-युद्धों में न खोया जाए या अनदेखा न किया जाए। दुनिया के दिन, उनके नाम और उनकी व्यवस्था। यह सब यहीं, हमारे अपने देश, भारत में शुरू हुआ था।

स्रोत:

1. श्री रामचन्द्र पांडे द्वारा सूर्य सिद्धांत
2. श्रीमद्भागवतम्
3. श्री आर्यभट्ट द्वारा रचित आर्यभटीयम्
4. इंटरनेट

Why Sunday Comes after Saturday?

Shri Vikrant Mishra, JWM

The time of our lives are divided in to weeks i.e 7 days

Sunday, Monday, Tuesday, Wednesday, Thursday, Friday, Saturday

Some named after celestial Bodies whereas other named after Greek Gods and a then with a very specific sequence which the whole world follows.
Have you ever thought about it,
who named the days?
who arranged them this way?
Why are there only 7 days in a week?

When you check the internet, the search engine will flood you with the answers of Egyptians, Babylonians, Greeks etc and why not. As we all have been taught that how they influenced Indian Astronomy. After all, the word "Hour" is derived from Greek Word "Hora".

Not really, There is no evidence for all of this. Absolutely Zero.

The pictures of all those serious looking personalities on the internet didn't do any of it. The West, just, gave them credit and We believed all of it without checking.

The Word, "Hour" comes from "Hora". But the word "Hora" itself has been derived from a Sanskrit Word "Ahoratra" (Source: Surya Sidhhanta).
The Book has got the finest content on Indian Astronomy.

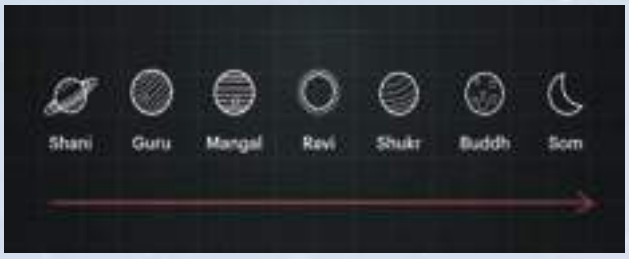

It says " Arrange the 7 Grahas (planets), visible to the naked eye,

from slowest to fastest and call it a sequence.

Make a list of hours of the day. Start Assigning each hour a Graha as per the sequence. When you reach to the bottom, carry over it to the next day. The Graha that gets the first hour of day is called the Dinpati. The deity of that Graha then also becomes the deity of that day. This is how the day get their Ve-dic names."

Hour	Dinpati						
1st	**Shani**	**Ravi**	**Som**	**Mangal**	**Budhh**	**Guru**	**Shukr**
2nd	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh
3rd	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som
4th	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani
5th	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru
6th	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal
7th	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi
8th	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr
9th	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh
10th	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som
11th	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani
12th	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru
13th	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal
14th	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi
15th	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr
16th	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh
17th	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som
18th	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani
19th	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru
20th	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal
21st	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi
22nd	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh	Guru	Shukr
23rd	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som	Mangal	Buddh
24th	Mangal	Buddh	Guru	Shukr	Shani	Ravi	Som

Now when you notice the sequence, that is the secret of actual sequence of the weekdays which whole world follows it.

But then, why is Mangalwar is called Tuesday and Not Mars day. You see, the Vedic days, were named after Vedic Deities. When Out of India, migrations happened, the days went too and got dumped after to corresponding local deities. Greeks, Romans etc and finally the English names were born.

Vedic	Greeks	Romans	Norse	Germanic Tribes	English
Ravi	Helios	Sol	Sunnudagr	Sun	Sunday
Som	Selene	Luna	Mánadagr	Moon	Monday
Mangal	Ares	Mars	Tysdagr	Tiwaz	Tuesday
Budhh	Hermes	Mercury	Óðinsdagr	Wodanaz	Wednesday
Guru	Zeus	Jupiter	Þórsdagr*	Thor	Thursday
Shukra	Aphrodite	Venus	Frjádagr	Frige	Friday
Shani	Cronus	Saturn	Laugardagr	Saturn	Saturday

*The Old Norse letter Þ makes a hard “th” sound. Hence the short Name gets Thor. Now, the excitement creeps in. Wow, Avengers finally to the list. Similarly, Goes for Odin (Buddhawar) and Frigga (Shukravar), Norse Mythology characters.

A 1000 years later, the Britishers taught it back to us. But, Indian Astronomy usually divides that day in to 30 Muhurtas. Where do these 24 hours come from?

Now, everyone, will jump in joy and counter. “ See.. That’s what Greeks Gave you” But unfortunately... It’s a NO.

Srimad Bhagwatam talks about ancient time when the days were divided in to 24 parts not 30
That is where Hora is being called as the 24th Part of the day. Here is where Greek Word Hora is getting sourced from.

But its just not Surya Siddhanta, or Srimad Bhagwatam talking about these positions.

The Book “Aryabhatiyam” also talks about the same arrangement.(Source Aryabhatiya,Kalkriyapad 16)

Unfortunately, Education Boards in India were way too busy in compiling the great contributions of Greeks, Mayans, Babylonians,Assyrians, Egyptians, Romans that they deliberately chose to ignore the mammoth contributions to Vedic Bharat to the Indian Astronomy.

But, a start or attempt has to be made from some point. Let it no longer be lost in Narrative wars or remain unacknowledged. The world’s days, their names and their arrangement. It all started here in this, our very own Country, Bharat.

Sources :

1. Surya Siddhanta by Shri Ramchandra Pandey
2. Srimad Bhagwatam
3. Aryabhatiyam by Shri Aryabhatta
4. Internet

हिन्दी दिवस/पखवाड़ा - प्रतियोगिताओं का परिणाम

Result of Hindi Day Fortnight

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम मुख्यालय में दिनांक 14.09.2025 से 28.09.2025 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं तथा पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों का विवरण निम्नलिखित है :-

Hindi Fortnight was organized at AVNL CO from 14.09.2025 to 28.09.2025. The details of competitions held during this fortnight and prizes won by the participants are given below:

क्रम सं S.No.	प्रतियोगिता Name of competition	नाम, पदनाम तथा अनुभाग Name, Designation & Section	पुरस्कार Prize
1	हिन्दी शब्द-शक्ति Hindi word-power	रशीदा, सहायक कंपनी सचिव(संविदा) Rasheeda, ACS(Contract)	प्रथम First
		के. गीता, क.का.प्र./संचालन K.Geetha JWM/Opns.	द्वितीय Second
		जननी, डीईओ (संविदा) Janani, DEO (Contract)	तृतीय Third
2	हिन्दी वार्तालाप Conversation	मुर्गेश प्रेमकुमार, वरि. कंटेंट लेखक Murgesh Praveen Kumar, Sr.C.W.	प्रथम First
		आर. अय्यप्पन, वरिष्ठ प्रबंधक R. Iyappan, Sr.Manager/HR	प्रथम First
		सोनी जैक्सन, क.का.प्र. Sony Jackson, JWM	द्वितीय Second
		एस. तमिलसेल्वन, सचिवीय सहायक S. Tamil Selvan, Secre.Asst.Cont)	द्वितीय Second
		सिद्धार्थ बरुआ, क.का.प्र. Siddharth Barua, JWM	तृतीय Third
		अंजना टी, मा.सं. /यु.पे. (संविदा) Anjana.T, Young Prof/HR (Contract)	तृतीय Third
		के. गीता, क.का.प्र./उत्पादन K.Geetha JWM/Prod.	सांत्वना-I Consolation-I
		परिमला प्रभला, क.का.प्र. Parimala Prabhala, JWM	सांत्वना-I Consolation-II
3	गीत प्रतियोगिता Hindi Song	के. गीता, क.का.प्र./संचालन K.Geetha JWM/Opns.	प्रथम First
		ए. सतीश कुमार, क.का.प्र. A. Sathish Kumar, JWM	द्वितीय Second
		सोनी जैक्सन, क.का.प्र. Sony Jackson, JWM	तृतीय Third
4	अंताक्षरी Antakshari	यशोदा जोशी, सहायक प्रबंधक Yashoda Joshi, Asst. Manager	प्रथम First
		यु. भाग्यलक्ष्मी, डी.ई.ओ.(संविदा) U. Bhagyalakshmi, DEO (Contract)	प्रथम First

S.No. क्रम सं.	प्रतियोगिता Name of competition	नाम, पदनाम तथा अनुभाग Name, Designation & Section	पुरस्कार Prize
		आर. सुजा, क.का.प्र. R. Suja, JWM	द्वितीय Second
		फर्हा सुल्ताना, डीईओ (संविदा) Farha Sulthana, DEO (Contract)	द्वितीय Second
		सिद्धार्थ बरुआ, क.का.प्र. Siddharth Barua, JWM	तृतीय Third
		के. गीता, क.का.प्र./संचालन K.Geetha JWM/Opns.	तृतीय Third
5	शुद्ध लेखन Dictation	बी. सुभद्रा, एमटीएस B. Subathra, MTS	प्रथम First
		भा. सुरेश, चार्जमैन/संचालन B. Suresh, CM/Opns.	द्वितीय Second
		यु. भाग्यलक्ष्मी, डी.ई.ओ.(संविदा) U. Bhagyalakshmi, DEO (Contract)	तृतीय Third
6	अंतर निर्माणी हिन्दी प्रश्न मंच Inter-factory Hindi Quiz	सी. श्रीनिवास कुमार, क.का.प्र./आ.नि.मे. C. Srinivasa Kumar, JWM/OFMK	प्रथम First
		जी. वेणु, क.का.प्र./आ.नि.मे. G. Venu, JWM/OFMK	प्रथम First
		श्री हेमंत कुमार, प्र.श्रे.लि./वा.नि.ज. Shri Hemanth Kumar, UDC/VFJ	द्वितीय Second
		विनय सिंह, प्र.श्रे.लि./वा.नि.ज Vinay Singh, UDC/VFJ	द्वितीय Second
		पी.आर. प्रदीप, एक्जामिनर/इं.नि.आ. P.R. Pradeep, Examiner/EFA	तृतीय Third
		टी. श्रीनिवासन, एक्जामिनर/इं.नि.आ. T. Srinivasan, Examiner/EFA	तृतीय Third

निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को निम्न प्रकार सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

The following officers/staff will be granted consolation prize as given below

क्रम सं S.No.	नाम, पदनाम तथा अनुभाग Name, Designation & Section - S/Shri/Smt.	पुरस्कार की राशि Amount in Rs.
1	एन. दिनेश विजयकुमार, क.का.प्र./मा.सं. N. Dinesh Vijayakumar, JWM/HR	300/-
2	शविम कुमार, परनियोजन प्रमुख (ई-ऑफिस) Shivam Kumar, Deployment Lead(E-Office)	300/-
3	ऋतु कशिोर, मा.सं./ युवा पेशेवर Reetu Kishore, HR/Y.P.	300/-
4	आर.महेश्वरन, स्टाफ कार ड्राइवर R. Maheswaran, Staff Car Driver	300/-

எவ்வளவு அழகு

Smt. P.L. Devi, DEO (Contract)

இந்த 26 வார்த்தைகள்..!

எவ்வளவு அழகு படியுங்கள் தெரியும்.

A- Appreciation- மற்றவர்களின் திறமையை மனதாரப் பாராட்டுங்கள்.

B- Behaviour - புன்முறுவல் காட்டவும் சிற்சில அன்புச் சொற்களைச் சொல்லவும் கூட நேரம் இல்லாதது போல நடந்து கொள்ளாதீர்கள்.

C- Compromise - அற்ப விஷயங்களைப் பெரிது படுத்தாதீர்கள். மனம் திறந்து பேசி சுமுகமாக தீர்த்துக் கொள்ளுங்கள்.

D-Depression - மற்றவர்கள் புரிந்து கொள்ளவில்லையே என்று சோர்வடையாதீர்கள்.

E- Ego - மற்றவர்களை விட உங்களை உயர்வாக நினைத்துக் கொண்டு கர்வப்படாதீர்கள்.

F- Forgive - கண்டிக்கக்கூடிய அதிகாரமும் நியாயமும் உங்கள் பக்கம் இருந்தாலும் எதிர்த் தரப்பினரை மன்னிக்க வழி இருக்கிறதா என்று பாருங்கள்.

G-Genuineness- எந்த விஷயத்தையும் நேர்மையாகக் கையாளுங்கள்.

H-Honesty - தவறு செய்தால் உடனே மன்னிப்பு கேட்பதைக் கௌரவமாகக் கருதுங்கள்.

I- Inferiority Complex - எவரையும் பார்த்து பிரமிக்காதீர்கள். நான் ஏன் இப்படி இருக்கிறேன் என்ற தாழ்வு மனப்பான்மையை விடுங்கள்.

J- Jealousy - பொறாமை வேண்டவே வேண்டாம் அது கொண்டவனையே கொல்லும்.

K. Kindness -இனிய இதமான சொற்களை மட்டுமே பயன்படுத்துங்கள்.

L-Loose Talk - சம்மந்தமில்லாமலும், அர்த்தமில்லாமலும் பின் விளைவு அறியாமலும் பேச வேண்டாம்.

M- Misunderstanding - மற்றவர்களைத் தவறாகப் புரிந்து கொள்ளாதீர்கள்.

N- Neutral எப்போதும் எந்த விஷயத்தையும் முடிவு எடுத்து விட்டுப் பேச வேண்டாம். பேசிவிட்டு முடிவு எடுங்கள். நடுநிலை தவறாதீர்கள்.

O- Over expectation - அளவுக்கு அதிகமாக எதிர்பார்ப்பு வைக்காதீர்கள். தேவைக்கு அதிகமாக ஆசைப்படாதீர்கள்.

P-Patience - சில சங்கடங்களை சகித்துத்தான் ஆக வேண்டும் என உணருங்கள்.

Q- Quietness - தெரிந்ததை மாத்திரமே பேசுங்கள். அநேகப் பிரச்சனைகளுக்குக் காரணம் தெரியாததைப் பேசுவது தான். கூடுமான வரை பேசாமலே இருந்து விடுங்கள்.

R- Roughness - பண்பில்லாத வார்த்தைகளையும் தேவையில்லாத மிடுக்கையும் காட்டாதீர்கள்.

S - Stubbornness- சொன்னதே சரி, செய்ததே சரி என பிடிவாதம் பிடிக்காதீர்கள்.

T- Twisting - இங்கே கேட்டதை அங்கேயும், அங்கே கேட்டதை இங்கேயும் சொல்வதை விடுங்கள்.

U- Under estimate மற்றவர்களுக்கும் மரியாதை உண்டு என்பதை மறவாதீர்கள்.

V- Voluntary - அடுத்தவர் இறங்கி வர வேண்டும் என்று காத்திராமல் நீங்களே பேச்சை முதலில் தொடங்குங்கள். பிரச்சனை வரும் போது எதிர் தரப்பில் உள்ளவர்களுக்கும் காது கொடுங்கள்.

Wound - எந்தப் பேச்சும் செயலும் யார் மனதையும் காயப்படுத்தாமல் இருக்கட்டும்.

X- Xerox- நம்மை மற்றவர்கள் எப்படி நடத்த வேண்டும் என்று எதிர்பார்க்கிறோமோ, அப்படியே மற்றவர்களை நாம் நடத்துவோம்.

Y- Yield - முடிந்தவரை விட்டுக் கொடுங்கள். விட்டுக் கொடுப்பவர்கள் கெட்டுப் போவதில்லை. கெட்டுப் போகிறவர்கள் விட்டுக் கொடுப்பதில்லை.

Z-Zero - இவை அனைத்தையும் கடைப் பிடித்தால் பிரச்சனை என்பது பூஜ்ஜியம் ஆகும்.

தன்னம் பிக்கை

V. அமுதா, MTS

ஒரு அரசன் போட்டி ஒன்றை அறிவித்தான். கோட்டை கதவை கைகளால் திறந்து தள்ள வேண்டும், வெற்றி பெற்றால் நாட்டின் ஒரு பகுதி தானமாக வழங்கப்படும். தோற்றால் தோற்றவனின் கைகள் வெட்டப்படும். மக்கள் பலவாறாக யோசித்து, பயந்து யாரும் போட்டியில் கலந்து கொள்ளவில்லை, ஒரே ஒரு இளைஞன் மட்டும் போட்டியில் கலந்து கொள்ள முன் வந்தான். போட்டியில் தோற்று விட்டால் கைகளை வெட்டி விடுவார்கள். உன்னுடைய எதிர்காலம் என்னவாகும்? என்றார்கள். அவன் சொன்னான்,' ஐயா வென்றால் நானும் ஒரு அரசன், தோற்றால் கைகள் தானே போகும். உயிரில்லையே என்று கூறி விட்டு கோட்டைக் கதவை இளைஞன் தள்ளினான். என்ன அதிசயம்! கதவு சட்டென திறந்து கொண்டது. ஏனென்றால், கோட்டைக் கதவுகளில் தாழ்ப்பாள் போடப்பட வில்லை. திறந்து தான் இருந்தது. பல பேர் இப்படித் தான் இருக்கிறார்கள். தோற்று விடுவோமோ, எதையாவது, இழந்து விடுவோமோ என்று எதற்கும் முயற்சிக்காமலேயே விட்டு விடுகிறார்கள். அனைவரும் அறிந்த 'முயல் - ஆமை, கதையில் முயலின் தோல்விக்கு 'முயலாமையே' காரணம்.

தன்னம்பிக்கை பற்றிய மேலும் சில வரிகள்

1. நீண்ட தூரம் ஓடி வந்தால் தான் உயரம் தாண்ட முடியும்
2. பிறர் முதுகுக்குப் பின்னால் நாம் செய்ய வேண்டிய காரியம் தட்டிக் கொடுப்பது மட்டும் தான்..
3. எழுந்திரு, விழித்திரு, இலக்கை அடையும் வரை நிறுத்தாதே.
4. சுமைகளை கண்டு துவண்டு விடாதே, இந்த உலகத்தை சுமக்கும் பூமியே உன் காலடியில் தான்.
5. பொய் சொல்லித் தப்பிக்காதே. உண்மையைச் சொல்லி மாட்டிக் கொள். பொய் வாழ விடாது, உண்மை சாகவிடாது.

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड

राष्ट्र की सुरक्षा एवं भारतीय रक्षा बलों को

अत्याधुनिक कवच समाधान

प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

आर्मर्ड व्हीकल्स निगम लिमिटेड, चेन्नई - 600054

ARMOURED VEHICLES NIGAM LIMITED

HVF Road, Avadi, Chennai - 600054

Designed & Printed by MD Prints : 9677051313